गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 195
दि. 16.11.2025,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

पीएम मोदी ने गुजरात में बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर मनाया जनजातीय गौरव दिवस, आदिवासी समाज के योगदान को किया सलाम

(जीएनएस)। नर्मदा, गुजरात। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात के नर्मदा जिले में आयोजित 'जनजातीय गौरव दिवस' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाग लिया और आदिवासी समाज के गौरव, संस्कृति और योगदान को याद किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि "जनजातीय गौरव हजारों वर्षों से हमारे भारत की चेतना का अभिन्न हिस्सा रहा है।" उन्होंने यह भी बताया कि स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समाज की भूमिका कभी भुलाई नहीं जा सकती।

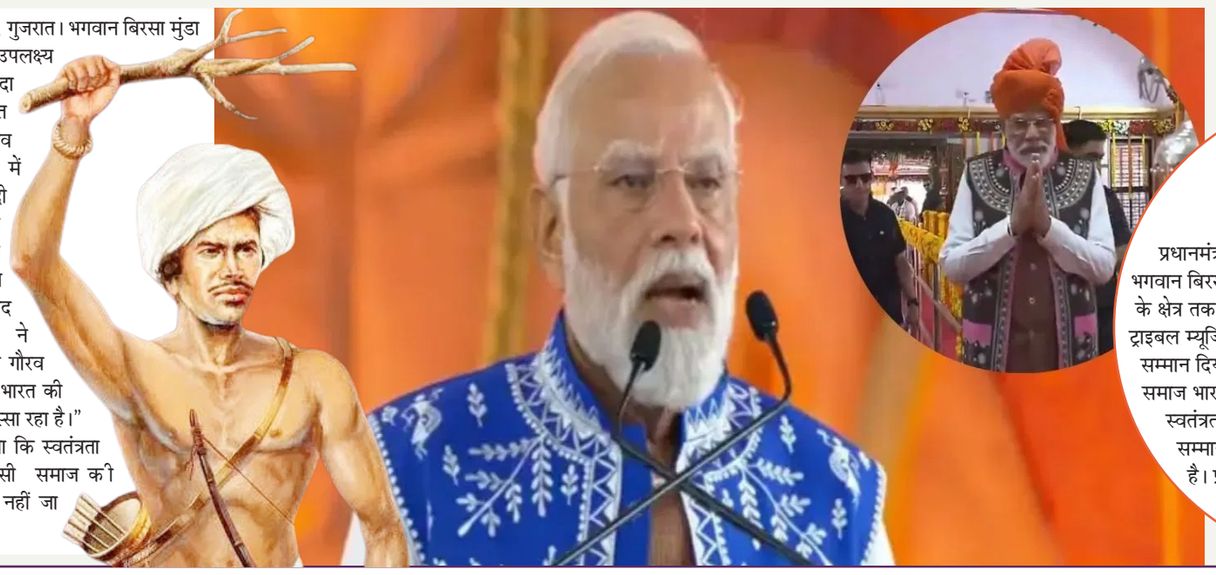

आदिवासी समाज का गौरव और इतिहास

प्रधानमंत्री मोदी ने जनसभा में कहा कि 2014 के पहले भगवान बिरसा मुंडा का स्मरण केवल उनके गांव और आसपास के क्षेत्र तक ही सीमित था। उन्होंने कहा, "आज देशभर में कई ट्राइबल म्यूजियम बनाए जा रहे हैं और उनके योगदान को उचित सम्मान दिया जा रहा है।" उन्होंने यह भी कहा कि आदिवासी समाज भारत के इतिहास और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समाज ने हमेशा देश के सम्मान और स्वराज के लिए अग्रणी भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि आदिवासी समाज की वीरता, साहस और समर्पण हमेशा याद रखा जाएगा।

श्री गोविंद गुरु चेयरः आदिवासी भाषाओं का संरक्षण

प्रधानमंत्री ने बताया कि 'श्री गोविंद गुरु चेयर जनजातीय भाषा संवर्धन केंद्र' की स्थापना की गई है। इस केंद्र के माध्यम से भील, गामित, वसावा, गरासिया, कोकणी, संथाल, राठवा, नायक, डबला, चौधरी, कोकना, कुंभी, वर्ली, डोडिया और अन्य सभी जनजातियों की भाषाओं, कहानियों और गीतों का अध्ययन एवं संरक्षण किया जाएगा। यह पहल आदिवासी संस्कृति और भाषा को आने वाली पीढ़ियों तक संरक्षित करने का प्रयास है। प्रधानमंत्री ने कहा, "जनजातीय गौरव हमारे भारत की चेतना का हिस्सा है। इनकी भाषाएं, गीत और परंपराएं हमारी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग हैं।" कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने 14 आदिवासी जिलों के लिए 250 बसों को हरी झंडी दिखाकर सेवा शुरू की। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य, सड़क, यातायात और अन्य क्षेत्रों में कई विकास परियोजनाएं शुरू की गई हैं, ताकि आदिवासी क्षेत्रों में लोगों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। प्रधानमंत्री ने कहा कि ये योजनाएं सिर्फ सेवा के लिए नहीं हैं, बल्कि यह आदिवासी समाज की भविष्य की राह आसान बनाने और उन्हें समान अवसर देने का प्रयास भी है। उन्होंने आदिवासी परिवारों को उनके योगदान और कल्याण से जुड़े विकास कार्यों के लिए बधाई दी।

भारत पर्व और विविधता का उत्सव

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि नर्मदा की पावन धरती भारत पर्व के आयोजन की साक्षी बन रही है। 2021 में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की गई थी। इसके अलावा, 31 अक्टूबर को यहां सरदार पटेल की 150वीं जयंती भी मनाई गई थी। मोदी ने कहा, "हमारी एकता और विविधता को सेलिब्रेट करने के लिए भारत पर्व शुरू हुआ है। आज हम बिरसा मुंडा की जयंती के साथ देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का सम्मान कर रहे हैं।" प्रधानमंत्री मोदी के इस कार्यक्रम ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि आदिवासी समाज की संस्कृति, गौरव और योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता और सम्मान मिलना चाहिए।

नौगाम पुलिस स्टेशन में विस्फोट: नौ की मौत, 32 घायल और प्रशासन की चिंता

(जीएनएस)। नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के नौगाम पुलिस स्टेशन में शुक्रवार देर रात एक भीषण विस्फोट ने पूरे इलाके को झकझोर दिया। केंद्रीय गृह मंत्रालय के अनुसार इस हादसे में नौ लोगों की जान चली गई, जबकि 32 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह विस्फोट जांच के दौरान बरामद किए गए विस्फोटकों के हैंडलिंग के समय हुआ। मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि विस्फोट के कारणों की जांच अभी जारी है और किसी भी तरह की अटकलें या अनुमान लगाना अभी अनुचित है।

घटना के विवरण के अनुसार, नौगाम पुलिस स्टेशन ने हाल ही में एक आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया था। जांच की कड़ी में दर्ज एफआईआर संख्या 162/2025 के तहत बरामद बड़ी मात्रा में विस्फोटक और रासायनिक पदार्थ पुलिस स्टेशन परिसर में सुरक्षित रूप से रखे गए थे। इनकी जांच दो दिन से चल रही थी। सभी सामग्रियों को सुरक्षा मानकों के अनुसार खुले परिसर में रखा गया था, जहां फोरेंसिक और रासायनिक विश्लेषण हो रहा था।

गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव (जम्मू-कश्मीर डिवीजन) प्रशांत लोखंडे ने बताया कि बरामद विस्फोटक अत्यंत संवेदनशील थे। विशेषज्ञों की निगरानी में बेहद सावधानी से हैंडल किए जा रहे थे, लेकिन शुक्रवार रात करीब 11:20 बजे अचानक जोरदार विस्फोट हो गया।

हादसे में 27 पुलिसकर्मी, दो राजस्व अधिकारी और तीन नागरिक गंभीर रूप से घायल हुए। सभी घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि पुलिस स्टेशन की इमारत का बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और आसपास के कई अन्य ढांचे भी प्रभावित हुए।

सरकार ने इस त्रासदी पर गहरा शोक व्यक्त किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने मृतकों के परिजनों को हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है। साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि जांच सभी संभावित वजहों को ध्यान में रखते हुए तेजी से चल रही है और इस कठिन समय में प्रशासन पूरी तरह से प्रभावित परिवारों के साथ खड़ा है।

जांच अधिकारियों का कहना है कि इस तरह के विस्फोट अत्यंत संवेदनशील मामलों में से हैं और इसमें सुरक्षा मानकों का पालन करना ही सबसे महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार किसी भी लापरवाही या सुरक्षा मानक की चूक की संभावना पर भी जांच की जा रही है।

नौगाम विस्फोट न केवल पुलिस प्रशासन के लिए चुनौती बन गया है, बल्कि यह पूरे राज्य में सुरक्षा एजेंसियों के लिए सतर्कता का संदेश भी है। अधिकारियों का कहना है कि राज्य और केंद्र सरकार इस घटना की व्यापक जांच कर रही हैं और भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचने के लिए सभी सुरक्षा प्रक्रियाओं की समीक्षा की जाएगी।

यह हादसा राज्य में सुरक्षा की संवेदनशील स्थिति को भी उजागर करता है। विशेषज्ञों का कहना है कि आतंकवाद और विस्फोटक मामलों में अतिरिक्त सतर्कता और विशेषज्ञ निगरानी की आवश्यकता है। नौगाम पुलिस स्टेशन विस्फोट इस बात की याद दिलाता है कि सुरक्षा एजेंसियों का काम जितना भी सतर्क हो, संवेदनशील पदार्थों की हैंडलिंग हमेशा जोखिमपूर्ण होती है।

दिल्ली ब्लास्टः बंगाल से एमबीबीएस छात्र निसार आलम गिरफ्तार

(जीएनएस)। कोलकाता। दिल्ली के लालकिला मेट्रो स्टेशन के पास हुए हालिया कार विस्फोट मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने एक और महत्वपूर्ण गिरफ्तारी को अंजाम दिया है। पश्चिम बंगाल पुलिस की सहायता से उत्तर दिनाजपुर जिले के दालखोला से अल-फलाह विश्वविद्यालय, फरीदाबाद में एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहे छात्र निसार आलम को हिरासत में लिया गया। यह गिरफ्तारी शुक्रवार देर रात संयुक्त छापेमारी के दौरान की गई।

सूत्रों के अनुसार, निसार आलम मूल रूप से दालखोला के कोनाल गांव का रहने वाला है, लेकिन उसका परिवार कई वर्षों से पंजाब के लुधियाना में रह रहा था। वह इस सप्ताह अपने परिवार के साथ एक पारिवारिक कार्यक्रम के सिलसिले में गांव आया था। जांच में निसार के मोबाइल लोकेशन को ट्रेस किया गया, जो दालखोला क्षेत्र में पाया गया। इसके आधार पर एनआईए टीम ने घटनास्थल पर पहुँचकर उसे कुछ ही घंटों में पकड़ लिया।

गिरफ्तारी के बाद निसार आलम को इस्लामपुर थाना ले जाकर लंबी पूछताछ की गई, जिसके बाद उसे सिलीगुड़ी स्थानांतरित कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि आरोपी को सोमवार तक ट्रांजिट रिमांड पर दिल्ली लाया जा सकता है, जहां उसे विस्फोट मामले में पूछताछ के लिए रखा जाएगा। कोनाल गांव के कई निवासियों ने कहा कि निसार शांत स्वभाव का युवक था और किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि में शामिल होने की खबर सुनकर वे हैरान हैं। उन्होंने बताया कि परिवार समय-समय पर गांव आता-जाता रहता था और कभी किसी शिकायत या विवाद में शामिल नहीं हुआ।

विश्वविद्यालय की निगरानी

इधर फरीदाबाद के धौज क्षेत्र में स्थित अल-फलाह विश्वविद्यालय पहले से ही सुरक्षा एजेंसियों की कड़ी निगरानी में है। दिल्ली विस्फोट में 12 लोगों की मौत और कई गंभीर रूप से घायल होने के बाद विश्वविद्यालय परिसर से भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री बरामद की गई थी। इसके बाद एनआईए और अन्य जांच टीमें विश्वविद्यालय परिसर में लगातार तलाशी और पूछताछ कर रही हैं।

पूछताछ का दायरा बढ़ा

अब तक जांचकर्ताओं ने कुल 52 डॉक्टरों से पूछताछ की है। इसमें विशेष रूप से डॉक्टर मुज़म्मिल शकील, डॉक्टर शाहीन शाहीद और डॉक्टर उमर मोहम्मद से जुड़े तथ्यों की गहन पड़ताल की जा रही है।

बिहार के मुजफ्फरपुर में भीषण आग हादसाः एक ही परिवार के पांच सदस्य जिंदा जले, पांच की हालत गंभीर

(जीएनएस)। पटना। बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में गुरुवार देर रात एक दर्दनाक आग हादसे ने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। घटना में एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच अन्य गंभीर रूप से झुलस गए हैं। प्रारंभिक जांच के अनुसार, यह आग घर में शॉर्ट सर्किट के कारण लगी, लेकिन इसकी पुष्टि फॉरेंसिक टीम की जांच के बाद ही हो पाएगी।

पश्चिमी डीएसपी सुचित्रा कुमारी ने बताया कि आग इतनी तेजी से फैल गई कि परिवार के सदस्य घर से बाहर निकल ही नहीं पाए। मृतकों में दो छोटे बच्चे भी शामिल हैं। मृतक हैं ललन कुमार (35 वर्ष), सुशीला देवी (60 वर्ष), पूजा कुमारी (30 वर्ष), सृष्टि कुमारी (7 वर्ष) और गोली (2 वर्ष)। स्थानीय लोगों और दमकल कर्मियों की मदद से आग पर काबू पाया गया।

हादसे के समय घर में कुल दस लोग मौजूद थे। पांच लोग गंभीर रूप से झुलस गए जिन्हें तुरंत मुजफ्फरपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, घायलों की हालत नाजुक है और उन्हें विशेष देखभाल में रखा गया है।

डीएसपी सुचित्रा कुमारी ने बताया कि फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल पर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक रिपोर्ट शॉर्ट सर्किट की संभावना की ओर इशारा कर रही है, लेकिन अंतिम निष्कर्ष जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगा। स्थानीय लोगों ने बताया कि घटना की भयावहता इतनी थी कि उन्होंने परिवार को बाहर निकालने की पूरी कोशिश की, लेकिन तेज लपटों और धुएं की वजह से यह संभव नहीं हो सका। आसपास के इलाके में रहने वाले लोग और पड़ोसी भी मदद के लिए घटनास्थल पर पहुंचे और आग बुझाने में योगदान दिया। मुजफ्फरपुर प्रशासन ने इस दुखद हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अधिकारियों ने मृतक परिवार के परिजनों को हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है। साथ ही प्रशासन ने कहा है कि घटना की विस्तृत जांच की जाएगी और भविष्य में इस तरह की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षा मानकों की समीक्षा की जाएगी।

हादसे ने न केवल परिवार को तबाह किया, बल्कि पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया है। पुलिस और दमकल विभाग की टीमों ने मिलकर तुरंत राहत और बचाव कार्य में जुटकर आग पर काबू पाया। प्रशासन ने आसपास के घरों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में भी सुरक्षा जांच बढ़ा दी है।

यह घटना यह याद दिलाती है कि घरों में ज्वलनशील और विद्युत उपकरणों के साथ सुरक्षा उपायों का पालन अत्यंत आवश्यक है। छोटे-मोटे लापरवाही या सुरक्षा मानकों की अनदेखी भी कभी-कभी इतनी भयावह त्रासदी का कारण बन सकती है।

कोलकाता के बड़ा बाजार में भीषण आगः लाखों का नुकसान दमकल विभाग जूझता रहा घंटों

(जीएनएस)। कोलकाता। शनिवार तड़के कोलकाता के बड़ा बाजार क्षेत्र में लगी भीषण आग ने पूरे इलाके को दहशत में डाल दिया। घटना की शुरुआत एज़रा स्ट्रीट स्थित एक इलेक्ट्रॉनिक सामान की दुकान से हुई, लेकिन आग इतनी तेजी से फैल गई कि पास-पड़ोस की कई दुकानों, गोदामों और इमारतों को अपनी चपेट में ले लिया। कुछ ही मिनटों में बाजार का अधिकांश हिस्सा धुएं और गर्मी की लहरों से भर गया।

दमकल विभाग को सुबह करीब पांच बजे इस घटना की जानकारी मिली। शुरुआती चरण में छह दमकल गाड़ियाँ भेजी गईं, लेकिन जैसे ही आग की भयावहता का अंदाजा हुआ, अतिरिक्त गाड़ियाँ मंगाई गईं और कुल 21 दमकल इंजनों को घटना स्थल पर तैनात किया गया। दमकलकर्मियों ने लगातार घंटों मेहनत कर आग पर काबू पाने की कोशिश की, लेकिन संकरी गलियों, घनी आबादी और ज्वलनशील सामान की वजह से उनकी मुसीबतें बढ़ गईं।

आग बुझाने के दौरान सुरक्षा कारणों से आसपास की बिजली आपूर्ति अस्थायी रूप से बंद कर दी गई। स्थानीय दुकानदारों और व्यापारियों ने बताया कि कई दुकानें पूरी तरह से जल गई हैं और गोदामों में रखी सामग्री का भी भारी नुकसान हुआ है। प्रारंभिक आकलन के अनुसार नुकसान लाखों रुपये का है, लेकिन अंतिम मूल्यांकन बाद में किया जाएगा।

कोलकाता पुलिस के डीसी सेंट्रल भी मौके पर पहुंचे और स्थिति की समीक्षा की। दमकल मंत्री सुजित बोस ने बताया कि प्रारंभिक जांच में यह आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगने की आशंका जताई जा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अंतिम निष्कर्ष जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगा। इसके लिए पुलिस और दमकल विभाग की संयुक्त टीम घटना के कारणों की विस्तृत जांच करेगी और भविष्य में ऐसे हादसों से बचने के लिए सुरक्षा उपायों का सुझाव भी तैयार करेगी।

घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि पुराने और ज्वलनशील सामान से भरे बाजारों में आग फैलने की तीव्रता कितनी खतरनाक हो सकती है। दमकलकर्मी, पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने मिलकर कठिन परिस्थितियों में भी आग को नियंत्रित किया, लेकिन नुकसान रोकना आसान नहीं था।

व्यापारियों का कहना है कि बाजार क्षेत्र में उचित सुरक्षा उपाय और नियमित निरीक्षण की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में इसी तरह के हादसों से बचा जा सके। वहीं स्थानीय लोग भी चिंतित हैं कि आग जैसी घटनाएँ केवल संपत्ति का ही नुकसान नहीं करतीं, बल्कि आसपास रहने वाले लोगों के जीवन के लिए भी गंभीर खतरा बन सकती हैं।

संपादकीय

फिर राजग का बिहार

बेहद जटिल सामाजिक परिस्थितियों वाले देश के बड़े राज्य बिहार का महासंग्राम आखिरकार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने जीत ही लिया। एनडीए ने बिहार में विपक्ष के महागठबंधन को करारी शिकस्त दी है। यह जीत पिछले साल महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति गठबंधन द्वारा महाविकास अघाड़ी को करारी शिकस्त देने जैसी ही है। चौंकाने वाली बात यह है कि बिहार में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और उसने उस राज्य में अपनी स्थिति मजबूत की है, जहां अभी तक उसका अपना मुख्यमंत्री नहीं रहा है। बिहार के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जनता दल यूनाइटेड यानी जदयू ने तमाम मुश्किलों को पार करते हुए सम्मानजनक दूसरा स्थान हासिल किया है। चुनाव से पहले नीतीश कुमार महागठबंधन के नेताओं के निशाने पर थे। उन्हें थका हुआ, बीमार और रिटायर होने वाला राजनेता बताया जा रहा था। कहा जा रहा था कि भाजपा ने नीतीश कुमार को पार्टी के मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में पेश नहीं किया। नीतीश कुमार के जो आलोचक उनकी विदाई लेख लिखने की जल्दी में थे, उन्हें चुनाव परिणामों के बाद मुंह की खानी पड़ रही है। जनता के फैसले ने बीते 2020 के विधानसभा चुनाव मे सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाले राष्ट्रीय जनता दल यानी राजद को इस बार तीसरे स्थान पर पहुंचा दिया है। बहरहाल, इस विधानसभा चुनाव के एकतरफा नतीजों का एक निष्कर्ष यह भी है कि सत्ता के लिये भाजपा व जदयू को एक साथ ही रहना होगा। जैसे कि नीतीश के पाला बदलने के चलते उन्हें पलटू राम की संज्ञा दी जाती थी, उसकी संभावना अब नजर नहीं आती। यानी नीतीश कुमार अब पलटू राम वाले अंदाज में नहीं चल सकते। उन्हें इस बात की तसल्ली मिल सकती है कि भारतीय जनता पार्टी, जिसके पास लोकसभा में पूर्ण रूप से बहुमत नहीं है, वह केंद्र में सरकार बचाने के लिये भविष्य में जदयू पर निर्भर रहेगी।

दरअसल, राजनीतिक पंडित कयास लगाते रहे हैं कि नीतीश कुमार को किनारा करने की भगवा पार्टी की कोई भी कोशिश सत्तारूढ़ गठबंधन के लिये मुश्किल खड़ी कर सकती है। वहीं कहा जाता रहा है कि चिराग पासवान एनडीए की कमजोरियों का फायदा उठाने से नहीं हिचकिचाएंगे। हालांकि, भाजपा नीतीश कुमार को बाहर करने के प्रलोभन का ज्यादा देर विरोध नहीं कर पाएगी, जैसा उसने महाराष्ट्र में शिवसेना के एकनाथ शिंदे के साथ किया था। बहरहाल, एक बात तो तय है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जीत ने महागठबंधन को तार-तार कर दिया है। साथ ही पदयात्रा व अपने बयानों से सुर्खियों में रहने वाले प्रशांत किशोर की नई सुबह की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। बिहार चुनाव में पस्त हुए महागठबंधन के दलों के सामने अगले साल विपक्ष शासित राज्य पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले फिर से संगठित होने की एक बड़ी चुनौती होगी। ये वे तीन विपक्षी दुर्ग हैं जिनमें सत्ता हासिल करने के लिये भारतीय जनता पार्टी कोई कसर नहीं छोड़ेगी। बहरहाल, एक बात तो माननी पड़ेगी बिहार में राजग की अप्रत्याशित जीत सारथी नरेंद्र मोदी की छवि, गृहमंत्री अमित शाह की नीति-कूटनीति, भाजपा के मजबूत संगठन, नीतीश कुमार की सामाजिक कल्याण की नीतियों की देन है। वहीं ऐन चुनाव से पहले एकजुट हुए महागठबंधन की विसंगतियां ही उसके पराभाव का कारक बनी। बहरहाल, राजग की महिलाओं को आर्थिक संबल की घोषणाओं, नीतीश की शराबबंदी आदि नीतियां महिला मतदाताओं को रिझाने में कामयाब रही हैं। यही वजह है कि महिला मतदाताओं ने इस विधानसभा चुनाव में बढ़-चढ़कर मतदान किया। यह प्रतिशत बिहार के मतदान इतिहास में रिक़ॉर्ड बनाने वाला था और चुनाव परिणाम भी उतने ही अप्रत्याशित रहे। बहरहाल, एक बार फिर जनतंत्र की भूमि ने अप्रत्याशित चुनाव परिणामों से देश को चौंकाया है। चुनाव परिणाम सामने आने के बाद दिल्ली स्थित भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा नरेंद्र मोदी ने कहा भी कि जिस एमवाई समीकरण को विपक्ष ने संकीर्णताओं के साथ पेश किया था, भाजपा ने उस एमवाई समीकरण को सकारात्मक दृष्टि से महिला व युवा गठजोड़ में तब्दील कर दिया।

बगावत की चिंगारी को बुझा कर बहुमत की ज्वाला पैदा करना कोई अमित शाह से सीखे

> देखा जाये तो केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की चुनावी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह रणनीति को तीन आयामों में रचते हैं— संगठन, समाज, और संदेश। यही भाजपा का वह मॉडल है जिसने उसे बार-बार कठिन इलाकों में जीत दिलाई है।

बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्ट्राइक रेट का 90% से ऊपर रहना संगठनात्मक पराक्रम का भी परिणाम है। चुनाव से पहले के हालात पर गौर करें तो नीतीश कुमार के खिलाफ एंटी-इनकम्बेंसी को खत्म करना सबसे बड़ी चुनौती थी। साथ ही गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बँटवारे और सबको साथ लेकर चलने की चुनौती भी थी। ऐसे में अमित शाह ने यह जिम्मेदारी अपने हाथ में ली। बिहार में अमित शाह ने 4–5 महीने पहले ही मोर्चा संभाल लिया था। अमित शाह के कमान संभालने के बाद भाजपा और सहयोगियों के बीच कई दौर की वार्ता हुई। अमित शाह JD(U), LJP (RV), RLSP और HAM को एक मंच पर लेकर आये। सीट-दर-सीट जातीय समीकरण का सटीक विश्लेषण किया गया और संभावित विवादों को समय रहते शांत किया गया। यह वह काम है जो सामान्यतः चुनाव घोषित होने के बाद शुरू होता है लेकिन अमित शाह ने महीनों पहले इसकी नींव तैयार कर दी थी। देखा जाये तो अमित शाह का चुनावी अभियान केवल मंच के भाषणों तक सीमित नहीं होता। उनकी शैली हमेशा जमीनी संरचना को मजबूत करने पर आधारित होती है। 5 जिला स्तरीय संगठन बैठकें, 5 क्लस्टर स्तर की बैठकें, 35 विशाल रैलियाँ, 1 महत्त्वपूर्ण रोड शो और और हर दौरे पर कोर ग्रुप के साथ बैठकें की गयीं। इस दौरान अमित शाह लगातार एक ही बात दोहराते रहे कि "बूथ जीते बिना चुनाव नहीं जीता जाता।" उनका यह फोकस बालू की दीवार को भी कंक्रीट का किला बना देता है। अमित शाह की निगरानी में बिहार में भाजपा का बूथ नेटवर्क तगड़ा हुआ और परिणाम सामने आया— प्रचंड जनादेश।

इसके अलावा, बिहार के दरभंगा जिले की अलिनगर विधानसभा सीट अचानक राष्ट्रीय सुर्खियों का केंद्र बन गई थी जब भाजपा ने यहाँ से लोकप्रिय मैथिली लोकगायिका मैथिली ठाकुर को उम्मीदवार बनाकर एक साहसी राजनीतिक दांव खेला था। हालांकि यह दांव

जितना आकर्षक था, उतना ही जोखिमभरा भी क्योंकि ज़मीनी स्तर पर तुरंत असंतोष की लहर उठी। वर्षों से पार्टी के प्रति निष्ठावान कार्यकर्ता खुद को उपेक्षित महसूस करने लगे और कई ने बगावत की चेतावनी दे दी। स्थिति ऐसी थी कि यह प्रयोग भाजपा के लिए आत्मघाती भी साबित हो सकता था। लेकिन राजनीति में संकट वहीं खत्म होता है जहाँ अमित शाह का प्रवेश होता है। चुनावी अभियानों के महारथी, संघटनात्मक इंजीनियरिंग के सिद्धहस्त और आधुनिक भारतीय राजनीति के अजेय रणनीतिकार, अमित शाह ने एक बार फिर दिखा दिया कि उन्हें यूँ ही भाजपा का 'चाणक्य' नहीं कहा जाता।

हम आपको बता दें कि अलिनगर उन सीटों में से थी जिन्हें भाजपा पारंपरिक रूप से "अनुकूल" नहीं मानती। मैथिली ठाकुर जैसे युवा चेहरे को उतारना प्रधानमंत्री मोदी के उस बड़े प्रयोग का हिस्सा था जिसमें वह पार्टी में युवाओं, कलाकारों और नई पीढ़ी को निर्णायक भूमिका में लाना चाहते हैं। लेकिन पुराने कार्यकर्ताओं की नाराज़गी ने स्थिति को नाजुक बना दिया। यहीं अमित शाह ने अपनी विशिष्ट शैली में कमान संभाली। उन्होंने थकान को दरकिनार करते हुए एक के बाद एक फोन कॉल किए, हर 'आक्रोशित' नेता को शांत किया, हर असंतुष्ट कार्यकर्ता को सुना और धीरे-धीरे बगावत की आग को पूरी तरह शांत कर दिया। यह वही हस्तक्षेप था जिसने मैथिली ठाकुर के लिए रास्ता साफ किया।

पार्टी के दिल्ली और पटना दोनों ही धड़ों में यह स्वीकार किया गया कि अलिनगर की ऐतिहासिक जीत अमित शाह की अथक मेहनत और उनके अद्वितीय संकट प्रबंधन क्षमता का परिणाम थी। बात सिर्फ अलिनगर की भी नहीं है क्योंकि रूठों को मनाने और असंतुष्टों को समझाने का काम अमित शाह ने पूरे बिहार में किया। उन्होंने बगावत की चिंगारी को बुझा दिया और बहुमत की ज्वाला पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनाव प्रचार के पूरे अभियान के दौरान अमित शाह ने अलग-अलग महत्वपूर्ण बैठकों, संवादों और रणनीतिक हस्तक्षेपों के माध्यम से न सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया, बल्कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति राजनीतिक सद्भावना को भी सार्थक दिशा दी।

देखा जाये तो अमित शाह की चुनावी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह रणनीति को तीन आयामों में रचते हैं— संगठन, समाज, और संदेश। यही भाजपा का वह मॉडल है जिसने उसे बार-बार कठिन इलाकों में जीत दिलाई है। देखा जाये तो चुनाव सिर्फ प्रचार से नहीं जीते जाते। चुनाव जीते जाते हैं संयम, संवाद, रणनीति और समय पर लिए गए सटीक निर्णयों से। यह जीत बताती है कि असंतोष चाहे कितना भी गहरा हो, संगठनात्मक नियंत्रक की भूमिका में अमित शाह अतुलनीय हैं। युवा चेहरों को आगे लाने का मोदी–शाह मॉडल सिर्फ प्रयोग नहीं, यह भविष्य की राजनीति का रोडमैप है। भाजपा अब सिर्फ परंपरागत समीकरणों पर नहीं, बल्कि नए सामाजिक-राजनीतिक प्रयोगों पर खड़ी एक गतिशील पार्टी बन चुकी है।

अमित शाह भले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं हैं, लेकिन पार्टी आज भी हर बड़ी चुनावी लड़ाई में उनके नेतृत्व-क्षमता पर ही निर्भर रहती है। वह महाराष्ट्र, हरियाणा और दिल्ली में भी कठिन परिस्थितियों को अवसरों में बदल चुके हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत है— राजनीति को भावना नहीं, प्रणाली के तौर पर देखना। अगला चुनावी युद्धक्षेत्र पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा कर दी है कि "बंगाल के जंगलराज को समाप्त करना है।" माना जा रहा है कि अमित शाह अब बंगाल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। क्योंकि जहाँ मोदी जन-भावना जगाते हैं, वहाँ शाह जन-भावना को संरचना में बदलते हैं।

बहरहाल, यदि राजनीति एक विद्या है, तो अमित शाह उस विद्या के अधिष्ठाता हैं— रणकौशल, बुद्धि और संगठनात्मक कठोरता के अद्वितीय संयोजन के साथ। अमित शाह की राजनीति आधुनिक चाणक्य की तरह निर्णायक और परिणाम-केंद्रित है।

प्रेरणा

सहायता की शक्ति: एक जीवन बदल देने वाली घटना

धीमी दोपहर की गर्मी सड़क पर फैल रही थी। धूल में हल्की-सी चमक थी और हवा में पेड़ों की पत्तियाँ धीरे-धीरे हिल रही थीं। सड़क पर भीड़ कम थी, लेकिन हर कोई अपने काम में व्यस्त था। इसी बीच एक लड़का अपने स्कूल की किताबों के साथ चल रहा था। उसके चेहरे पर मासूमियत और उत्सुकता झलक रही थी। वह आस-पास की छोटी-छोटी चीज़ों को देख रहा था—कभी उड़ते हुए कागज़ के टुकड़े पर नज़र डालता, कभी फुटपाथ पर पड़े पत्तों पर ध्यान देता। उसकी दुनिया इतनी मासूम और सरल थी कि वह आसपास की तेज़ रफ्तार वाली जिंदगी से बिल्कुल जुदा महसूस हो रहा था।

लेकिन जीवन अक्सर अचानक सबक देता है। जैसे ही वह सड़क पार कर रहा था, पीछे से तेज़ रफ्तार में आती एक मोटर ने उसकी ओर बढ़ती। हॉर्न बजने के बावजूद लड़का सही दिशा में नहीं हट पाया। मोटर का हल्का टकराव हुआ, और लड़का सड़क पर गिर पड़ा। गिरते ही उसका घुटना और कोहनी छिल गई, और खून बहने लगा। दर्द और अचानक भय से लड़का वहीं सड़क पर बैठकर चिल्लाने लगा। पास से गुजर रहे लोग घबरा गए। कुछ ने दूर से देखा, कुछ ने अपने कदम आगे बढ़ाए, लेकिन फिर रुक गए। हर किसी के मन में था—किसी और की मदद करेगा। लेकिन वहीं से गुजर रहा एक युवक, आस्ट्रले, अचानक अपनी जगह पर ठहर गया। उसकी आँखों ने लड़के के बहते खून को देखा और कुछ ही क्षणों में उसके भीतर जाग उठा—किसी की मदद करना अब मेरा कर्तव्य है।

आस्ट्रले बिना किसी हिचकिचाहट के दौड़कर लड़के के पास गया। उसने अपनी शर्ट से रूमाल निकाला, उसे दो हिस्सों में फाड़ा और धैर्यपूर्वक लड़के के घाव पर कसकर बांध दिया। उसके हाथ स्थिर और निश्चिंत थे, जैसे वर्षों से यह काम करता आया हो। पट्टी बांधते ही लड़के की सांसें सामान्य हो गईं और खून बहना रुक गया। आस-पास खड़े लोग हैरान थे।

लड़के के पिता दौड़ते हुए आए और आस्ट्रले का हाथ पकड़कर बोले, "तुमने मेरे बच्चे की जान बचाई है। मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा।" यह शब्द आस्ट्रले के दिल को झकझोर गए। उसी पल उसने मन ही मन ठान लिया कि वह अपने जीवन में हमेशा लोगों की मदद करेगा और जरूरतमंदों की सेवा करेगा।

उस रात, घर लौटते हुए, आस्ट्रले अपने मन में एक योजना बनाने लगा। उसने तय किया कि वह चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करेगा। भले ही पढ़ाई कठिन हो, भले ही उसके परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य हो, पर उसके संकल्प ने उसे किसी बाधा से डरने नहीं दिया। उसने दिन-रात मेहनत शुरू की। शरीर की संरचना को समझना, जटिल सर्जरी की तकनीक सीखना और रोगियों की देखभाल करना—इन सबमें उसने खुद को पूरी तरह झोंक दिया।

वक्त बीतता गया और आस्ट्रले ने चिकित्सा क्षेत्र में नाम कमाया। वह एक कुशल सर्जन बन गया, जिसकी हाथों में हर मरीज ने नया जीवन पाया। जिन लोगों को कोई उम्मीद नहीं दिखाता, वे आस्ट्रले के हाथों में आशा देखते। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, लेकिन उसकी संवेदनशीलता और साधारण जीवन के प्रति समझ बनी रही। वह कभी भी अपनी सफलता में गर्वित नहीं हुआ, बल्कि हमेशा याद रखा कि एक छोटी-सी घटना ने उसकी जिंदगी बदल दी।

आस्ट्रले अक्सर कहता, "कभी सड़क पर एक छोटे लड़के की मदद करने का मौका मिला था। उसी दिन मैंने अपने जीवन का उद्देश्य पहचाना।" उस दिन से लेकर अब तक उसका जीवन उसी संकल्प के चारों ओर घूमता रहा—सहायता करना और जीवन बचाना।

यह कहानी यह सिखाती है कि एक छोटी-सी मदद कभी-कभी किसी की पूरी जिंदगी बदल सकती है। एक व्यक्ति की तत्परता, एक क्षण की साहसिकता, और समाज में दूसरों की भलाई के प्रति प्रेरणा—यही ताकत है जो साधारण इंसान को असाधारण बना देती है।

आस्ट्रले की कहानी यह बताती है कि जीवन में सही समय पर उठाया गया एक कदम न केवल किसी की जान बचा सकता है, बल्कि उस व्यक्ति के पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है। और इसी छोटी सी घटना से शुरू हुई उसकी यात्रा, समाज के लिए प्रेरणा बन गई, और वह एक प्रसिद्ध, कुशल और मानवता से भरपूर सर्जन के रूप में दुनिया में जाना गया।

बिहार में मोदी की अजेय जीत राजनीतिक मायने और भविष्य की छवि

प्रतीकों, मूल्यों, संस्कृति और परंपराओं की पिच पर आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं हरा पाएंगे। ये मोदी और बीजेपी की पसंदीदा पिच है। अगर इस पर विपक्ष फंसा तो उसकी करारी हार सुनिश्चित है विपक्ष हर बार यही ग़लती करता है। वो भारतीय मानस को समझे बिना मोदी को ललकारता है। हिंदू संस्कृति के मानबिंदुओं, परंपराओं और आस्था पर कटाक्ष करता है। अपमानित करता है। विपक्ष को लगता है कि वो हिंदुत्व को गाली देकर जीत सकता है। विपक्ष को लगता है कि वो भारतीय सेना के शौर्य को चुनौती देकर चुनाव जीत सकता है। विपक्ष को ये लगता है कि जाति के नाम पर विभाजन उत्पन्न कर जीत सकता है। अगर इस मुगालते में विपक्ष है तो वो मोदी से कभी नहीं जीत सकता है। क्योंकि कौन से प्रतीकों को कहां और किस अंदाज़ में आज़माना है। ये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बख़ूबी जानते हैं। यूं कहूं तो वो इसमें सिद्धहस्त हैं। इसके जादूगर हैं।

हरियाणा, महाराष्ट्र के बाद बिहार विधानसभा के ये परिणाम बता रहे हैं कि — आप हिंदू संस्कृति का अपमान कर कोई भी चुनावी किला फतह नहीं कर सकते। आप सांविधानिक संस्थाओं का अपमान कर चुनाव नहीं जीत सकते। विपक्ष को ये समझना होगा कि जिस Gen-Z के नाम पर देश में नेपाल जैसी अराजकता का बिगुल फूंका जा रहा था। भारत के Gen-Z ने उसकी हवा निकाल दी है। उसने भर-भर के एकमुश्त वोट NDA की झोली में डालकर राजतिलक कर दिया है। महिलाओं ने बड़ी ख़ामोशी से प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर अपना विश्वास जताया है।

देश की जनता ये जान चुकी है कि वर्षों तक सत्ता में रहने वाली कांग्रेस और आरजेडी समेत तमाम विपक्षी दल अब मुद्दाविहीन हो चुके हैं। क्या देश की जनता को ये नहीं दिखता रहा है कि - कैसे समूचा विपक्ष संसद की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा था। क्या देश की जनता ये नहीं देख रही थी कि- कैसे राहुल गांधी के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन अराजकता का वातावरण बना रहा था। राष्ट्रीय हित के मुद्दों में इंडी गठबंधन के दलों का गतिरोध, तुष्टिकरण क्या देश की जनता नहीं देख रही थी?

विपक्षी दलों को क्या लगता कि केवल आचार संहिता लगते ही चुनावी जंग जीती जाती है? अगर ये सोचते हैं तो इससे बड़ी भूल भला क्या हो सकती है? जनता हर समय राजनीतिक दलों, उनके नेताओं के आचरणों को देखती है। परखती है। उसके बाद धैर्यपूर्वक ढंग से आंकलन करती है। तत्पश्चात अपना निर्णय सुनाती है।

जीत के ये आंकड़े बता रहे हैं कि —देश की जनता जान चुकी है कि विपक्ष ऐनकेन प्रकारेण केवल सत्ता हासिल करना चाहते हैं। उनकी नीयत में खोट है। क्योंकि क्षेत्रीय दलों को निगल जाने के बाद केवल 99 सीटें लोकसभा चुनाव में जीतने के बाद कांग्रेस जिस ढंग से ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार कर रही है। कांग्रेस के नेता और विशेष तौर पर राहुल गांधी जिस तरह से मोदी विरोध में—देश विरोधी मानसिकता से ग्रस्त दिख रहे हैं। सामाजिक समरसता को तोड़ने वाले बयान दे रहे हैं। देशद्रोही कम्युनिस्टों की लाइन पर चल रहे हैं। भारतीय समाज में अराजकता, हिंसा फैलाने जैसी बातें कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे कम्युनिस्टों ने राहुल गांधी को हाईजैक कर लिया हो। क्या जनता ये सब नहीं देखती है?

अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से लेकर, हिंदुत्व, छठी मैया आदि के विरुद्ध राहुल गांधी के अनर्गल बयान। मिथ्याप्रचार। भारतीय सेना को अपमानित करते हुए विभाजनकारी बयान देना। बात-बात में हिंदुओं को जातियों में बांटने की वकालत करना। भाषा के आधार पर विभाजन के बीज बोना।तुष्टिकरण के लिए नए वक़्फ़ क़ानून के विरोध में उतरना। घुसपैठ जैसी घातक समस्या को ख़ारिज़ करना।लव जिहाद और कन्वर्जन के आतंक के विरुद्ध चुप्पी साधे रहना। मौन समर्थन देना। नेता प्रतिपक्ष की भूमिका को मज़ाक बना देना। विदेशों में जाकर भारत की सांविधानिक संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना। हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर आघात करना। कम्युनिस्टों की तर्ज़ पर माओ की तरह रेड बुक रखना। बार-बार संविधान का माखौल उड़ाना। RSS जैसे राष्ट्रनिष्ठ संगठनों पर झूठे आक्षेप लगाना। कांग्रेस शासित राज्यों में संविधान की हत्या करते हुए प्रतिबंध लगाने का कुकृत्य करना। प्रधानमंत्री जैसे गरिमामय पद पर बैठे ओबीसी वर्ग से आने वाले — नरेंद्र मोदी जी को — तू-तड़ाक जैसी भाषा से संबोधित करना। जनता ये सब देख रही थी और ये भी गांठ बांध रही थी कि — जो व्यक्ति प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे ओबीसी वर्ग के व्यक्ति के प्रति ऐसी घृणा रखता है। वो आम आदमी का क्या सम्मान करेगा? क्या कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल ये भूल गए कि - जनजातीय समाज की बेटी द्रौपदी मुर्मू जी के विरुद्ध उन्होंने राष्ट्रपति का कैंडिडेट उतारा था। वो क्यों? इसीलिए न ताकि कोई जनजातीय समाज का व्यक्ति सर्वोच्च आसंदी पर न बैठ सके। विपक्ष को क्या लगता है कि देश और बिहार की जनता ये सब नहीं देख रही थी? भला, हार मिलने पर — अपने कृत्य क्यों भूल जाते हैं?

वहीं परिवारवाद के शीर्ष उदाहरण राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा और तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव— ये सब क्या ये नहीं जानते हैं कि जनता अब 'परिवारवाद' को उखाड़ फेंक चुकी है। तिस पर भ्रष्टाचारी लालू परिवार। जंगलराज के आतंक का ख़ौफ, लालू यादव की विवशता। धर्मनिष्ठ आचरण वाले तेजप्रताप यादव जैसे भाई का निष्कासन, आरजेडी पर कब्ज़ा और लालू की विवशता भरी ईसाइयत से रंगी 'हैलोवीन' पार्टी। बिहार की जनता ये सब बारीकी के साथ देख रही थी। बिहार की जनता ये जान रही थी कि कैसे तेजस्वी यादव के यहां अब ईसाईयत और मिशनरीज़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हिंदू परंपराओं को किनारे कर चोट पहुंचाई जा रही है।अन्यथा राजनीतिक फायदे के लिए 'छठी मैया' का राहुल गांधी ने जिस प्रकार से अपमान किया था। बिहार की जनता ये जान रही थी कि किसकी शह पर खेसारी जैसे दोयम दर्जे के लोग — श्रीराममंदिर पर अपमानजनक टिप्पणी कर रहे थे। क्या तेजस्वी यादव इन सबका विरोध नहीं करते?

वस्तुतः ये परिणाम चीख-चीख कर यही कह रहे हैं कि -जनता विपक्ष की नीयत के खोट को अच्छी तरह से जान-पहचान चुकी है। इसीलिए जनता अपने मतदान के ज़रिए इन दलों की नियति में हर बार खोट का सर्टिफिकेट लगा देती है। S-I-R, EVM हैक और वोट चोरी के मिथ्या आरोपों को जनता अच्छी तरह जान चुकी है।

अभियान

संसार, माया और ईश्वर की शरण: पार्वती और रघुनाथजी का संवाद

बहुत समय पहले की बात है। जब ब्रह्मांड अपने प्रारंभिक रूप में अत्यंत शांत और रहस्यमय था, उस समय देवों और मनुष्यों के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान भी चल रहा था। एक दिन माता पार्वती अपने ध्यान में बैठी थीं। उनके मन में यह प्रश्न उमड़ रहा था कि इस संसार का वास्तविक स्वरूप क्या है और मनुष्य क्यों जन्म-मरण के चक्र में फँसा रहता है। इसी विचार में वे भगवान रघुनाथजी की शरण में पहुँचीं।

माता पार्वती ने प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभु! संसार में भ्रम बहुत है। मनुष्य सुख और दुःख के बीच भटकता रहता है। वह इस जन्म और मृत्यु के चक्र से क्यों नहीं मुक्त होता? हे रघुनाथजी, क्या यह संसार केवल माया है या इसका कोई स्थायी आधार भी है?"

भगवान रघुनाथजी ने अपनी करुणामयी दृष्टि माता पार्वती की ओर उठाई और उन्होंने कहा—"हे पार्वती! यह संसार भले ही असत्य प्रतीत होता हो, परंतु यह सब मेरे अनुग्रह और शक्ति से ही अस्तित्व में है। जो व्यक्ति मेरी कृपा और ज्ञान से परिपूर्ण होता है, उसके लिए यह संसार भ्रम का कारण नहीं बनता। और जो बिना ज्ञान के उसमें रम जाता है, वह दुःख और मोह का शिकार होता है।"

माता पार्वती ने और प्रश्न किया—"हे प्रभु! क्या आपके आदि और अंत का कोई पता है? क्या कोई यह जान सकता है कि आपकी उत्पत्ति कहाँ से हुई और आप कब तक हैं?"

भगवान ने हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया—"मेरे आदि और अंत का कोई ज्ञान नहीं रख सकता। न तो समय की सीमा मुझे बांध सकती है, न ही किसी की बुद्धि मेरी पूर्णता को समझ सकती है। वेदों ने केवल अपनी बुद्धि और अनुभव से अनुमान लगाया है कि मैं अनादि और अनंत हूँ। संसार का प्रत्येक अणु और प्रत्येक जीव मेरे आश्रित हैं। जितना यह संसार दिखता है, वह सब मेरे अधीन है।"

माता पार्वती ने ध्यानपूर्वक सुना और पूछा—"हे प्रभु! यदि संसार असत्य है, फिर भी वह दुःख देता क्यों है? यदि माया है, तो वह मनुष्य के जीवन को कैसे प्रभावित करती है?"

रघुनाथजी ने कहा—"हे पार्वती! संसार माया है, यह सही है। यह स्थायी नहीं, यह क्षणिक है। फिर भी इस माया में व्यक्ति अपने अहंकार, मोह और इच्छाओं के कारण उलझा रहता है। यही इच्छाएँ उसे दुःख देती हैं। जैसे कोई शिशु पानी में डूबकर खेल रहा होता है, उसे आनंद भी मिलता है और चोट भी लगती है। संसार भी उसी प्रकार है—यह सुख और दुःख दोनों का स्रोत है। परंतु जो व्यक्ति मेरे

नाम, मेरी कृपा और ज्ञान का सहारा लेता है, उसे यह माया भ्रमित नहीं करती। वह दुःख में स्थिर रहता है, मोह में उलझता नहीं, और जीवन का सही अर्थ समझता है।"

माता पार्वती ने कहा—"हे रघुनाथजी! आप ही मेरे जीवन के आधार हैं। आपकी कृपा से ही भ्रम मिटता है, और मनुष्य सच्चा मार्ग देख पाता है। यदि हर व्यक्ति आपके पास आता और आपका ध्यान करता, तो यह संसार दुःख और अनर्थ का घर न बनता।"

भगवान ने समझाया—"हे पार्वती! यही सत्य है। संसार माया का खेल है। यह कभी स्थायी नहीं है। यह जन्म और मृत्यु, सुख और दुःख, सफलता और विफलता—सबके माध्यम से मनुष्य को शिक्षा देता है। लेकिन जो मनुष्य मेरे आश्रित होकर ध्यान करता है, वह इन घटनाओं से विचलित नहीं होता। वह समझता है कि हर दुःख, हर असत्य घटना केवल मेरे द्वारा नियोजित व्यवस्था का हिस्सा है। यही वह मार्ग है जो उसे भ्रम से मुक्त करता है।"

माता पार्वती ने गहरी शांति का अनुभव किया। उनके मन से भय, मोह और संदेह धीरे-धीरे गायब होने लगे। उन्होंने देखा कि संसार भले ही अस्थायी और माया से भरा है, लेकिन भगवान के आश्रित और कृपालु होने से व्यक्ति सुरक्षित और स्थिर रह सकता है। उन्होंने रघुनाथजी से प्रण किया—"हे प्रभु! मैं भी अपने जीवन में आपके भक्ति और कृपा के मार्ग पर चलूंगी। मैं दूसरों को भी यह ज्ञान दूँगी कि संसार असत्य है, दुःख देता है, परंतु आपकी शरण में सब कुछ सुरक्षित है।"

तब रघुनाथजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया—"हे पार्वती! जो मनुष्य मुझमें श्रद्धा और भक्ति रखता है, वह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसका जीवन सुख, शांति और मोक्ष से परिपूर्ण होता है। संसार भले ही भ्रम और दुःख से भरा है, पर मेरी कृपा से प्रत्येक जीव शांति पा सकता है।"

इस प्रकार माता पार्वती ने ईश्वर की अनंत कृपा और संसार की माया का रहस्य समझा। उन्होंने जाना कि केवल ईश्वर की शरण और ज्ञान ही जीवन के भ्रमों और दुःखों से मुक्ति दिला सकता है। यह संवाद न केवल माता पार्वती के लिए ज्ञान का स्रोत बना, बल्कि हम सभी के लिए भी संदेश है—संसार असत्य और क्षणिक है, दुःख देता है, परंतु भगवान की शरण में हर मनुष्य स्थिर और सुरक्षित रह सकता है।

यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में जब भी भ्रम और दुःख हमें घेरे, हमें अपने भीतर की दृष्टि को ईश्वर की ओर मोड़ना चाहिए। उनके आश्रय, उनके ज्ञान और उनके आशीर्वाद से ही मनुष्य भ्रम और दुःख से मुक्त हो सकता है और सच्चे जीवन का अनुभव कर सकता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा में जनजातीय गौरव दिवस पर राष्ट्रीय स्तर का भव्य समारोह आयोजित

- प्रधानमंत्री ने 9700 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी, गुजरात के जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए 2000 करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना लॉन्च की
- जनजातीय समुदाय राष्ट्रीय सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की रक्षा के लिए सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़ा रहा है : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
- प्रधानमंत्री ने बिरसा मुंडा के वंशज श्री सुखराम मुंडा और रवि मुंडा को शॉल और पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी :-

- जनजातीय युवाओं को मेहनत, परंपरा और काबिलियत विरासत में मिली है
- हमारी सरकार ने जनजातीय समाज की मिट्टी की महक, परंपरा, पुरुषार्थ और भावी आकांक्षाओं को एक सूत्र में जोड़कर जनजातीय गौरव को पुनः उजागर करने का बीड़ा उठाया है
- 2014 से पहले भगवान बिरसा मुंडा और उनके योगदान को भुला दिया गया था : इस सरकार ने जनजातीय जननायकों को उचित सम्मान दिया
- सिकल सेल रोग का सामना करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का अभियान छेड़ा है : अब तक देश के छह करोड़ जनजातीय नागरिकों की सिकल सेल हेल्थ स्क्रीनिंग पूरी हो चुकी है

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- देश भर में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाकर प्रधानमंत्री ने उन्हें सच्चे अर्थ में सम्मान दिया
- 'हमारा देश, हमारा राज' सूत्र की प्रेरणा के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विजन 'आत्मनिर्भर-विकसित भारत' के संकल्प के रूप में चरितार्थ हो रहा है

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के भव्य एवं गौरवशाली समारोह में धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर भाववंदना करते हुए कहा कि जनजातीय समुदाय देश के सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की रक्षा के लिए सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़ा रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई, जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की रक्षा तथा जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए जन-जन में चेतना जगाने वाले धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती को यादगार बनाने और जनजातीय नायकों के शौर्य तथा अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए 2025 का वर्ष देश भर में जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में कुल 9700 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी। प्रधानमंत्री ने गुजरात के जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए 2000 करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना भी लॉन्च की।

प्रधानमंत्री ने सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित देवमोगरा धाम में जनजातियों की आराध्य याहा मोगी पांडोरी माता के दर्शन और पूजा-अर्चना कर धन्यता का अनुभव किया। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ खुली जीप में सवार होकर सभामंडप में मौजूद जनसमूह के बीच से गुजरते हुए जनजातीय बंधुओं का अभिवादन स्वीकार किया।

प्रधानमंत्री ने विशाल जनजातीय समुदाय को संबोधित करते हुए आगे कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर हमें 'सबका साथ, सबका विकास' मंत्र को मजबूत बनाने का संकल्प लेना है। यह वही जनमंत्र है जिससे 'विकास में कोई पीछे न रहे और कोई विकास से वंचित भी न रहे' की भावना के साथ सरकार ने जनजातियों के उत्कर्ष की राह चुनी है।

आजादी की लड़ाई और देश के विकास में जनजातियों के योगदान की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने अतीत की सरकारों द्वारा जनजातीय समुदाय के प्रति बरती गई उपेक्षा की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि छह दशकों तक देश पर शासन करने वाले विपक्ष द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की निरंतर उपेक्षा की गई। इतना ही नहीं, जनजातियों के साथ अन्याय किया गया और उन्हें विकास की मुख्यधारा में शामिल करने के बदले हाशिये पर धकेल दिया गया।

प्रधानमंत्री ने जनजातीय बंधुओं को उनकी सरकार द्वारा दिए गए गौरव और सम्मान के संदर्भ में कहा कि सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आर्थिक विकास के क्षेत्र में अनेक योजनाएं लागू कर जनजातीय समाज के उत्थान और विकास की प्रतिबद्धता दिखाई है।

उन्होंने कहा कि पीएम जनमन योजना के अंतर्गत अति पिछड़े जनजातियों के लिए 24,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। पीएम जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत देश के लगभग 60,000 गांव लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी सरकार ने अति पिछड़े जनजातीय जिलों को आकांक्षी जिलों के रूप में चिन्हित कर अधिक बजट आवंटन के जरिए सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रेरित किया है।

उन्होंने कहा कि लघु वनोपजों की संख्या 20 से बढ़ाकर 100 कर दी गई है। इसके अलावा, वनोपजों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) भी बढ़ा दिया गया है और जनजातीय विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर राज्य और केंद्र सरकार साथ मिलकर निरंतर कर्तव्यरत है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जनजातीय समुदाय में पाई जाने वाली खतरनाक सिकल सेल बीमारी का सामना करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का अभियान चलाया है। इसके अलावा, जनजातीय क्षेत्रों में डिस्पेंसरी, चिकित्सा केंद्रों और अस्पतालों की संख्या बढ़ाई गई है। इसके परिणामस्वरूप अब तक देश के छह करोड़ जनजातीय नागरिकों की हेल्थ स्क्रीनिंग हो चुकी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जनजातियों के इतिहास, कला, संस्कृति और प्राचीन भाषा को पुनर्जीवित करने के लिए बिरसा मुंडा आदिजाति यूनिवर्सिटी में जनजातीय भाषा संवर्धन केंद्र के लिए श्री गोविंद गुरु पीठ की भी स्थापना की है, जहां भील, गामित, वसावा, गरासिया, कोंकणी, संथाल, राठवा, नायक, दबला, चौधरी, कोंकणा, कुंभी, वारली और ढोडिया आदि सभी जातियों की बोलियों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत जनजातीय गाथाओं, लोक काव्यों, लोक कहानियों और प्राचीन गीतों का संग्रह और संरक्षण किया जाएगा। उन्होंने हजारों वर्षों से चली आ रही जनजातीय कला और संस्कृति का गौरवगान करने और उसे भारतीय चेतना का अभिन्न हिस्सा बनाने के सरकार के प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी।

प्रधानमंत्री ने जनजातीय क्षेत्रों में अतीत की विकट स्थिति की याद ताजा करते हुए कहा कि दो दशक पहले अंबाजी से उमरगाम तक के जनजातीय पट्टे में एक भी साइंस कॉलेज नहीं था, जबकि गत दो दशकों में दो दर्जन साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज शुरू हुए हैं। इन क्षेत्रों में शिक्षा, सुविधाओं, योजनाओं और आर्थिक गतिविधियों का दायरा लगातार बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने गुजरात में वनबंधु कल्याण योजना का दायरा बढ़ाकर अंबाजी से उमरगाम तक के जनजातीय बेल्ट तक विकास के फल पहुंचाने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व की सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की भाववंदना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आदिवासी समाज के वीरों को सम्मान देकर भव्य इतिहास को पुनर्जीवित कर लोगों के समक्ष रखा और 'विकास भी, विरासत भी' को साकार किया है।

श्री पटेल ने कहा कि देश को स्वतंत्रता दिलाने में बड़ा योगदान देने वाले जनजातियों के आराध्य भगवान बिरसा मुंडा तथा अनेक जनजातीय वीर शहीदों का भव्य इतिहास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दशकों तक उपेक्षित था। उन्हें सम्मान दिलाने कार्य प्रधानमंत्री ने किया है। प्रधानमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी की जयंती 15 नवंबर को देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की परंपरा का सूत्रपात किया है।

मानगढ़ क्रांति के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि मानगढ़ क्रांति संग्राम के सेनानी गोविंद गुरु तथा भील बांधवों की स्मृति में गोविंद गुरु स्मृति वन का मानगढ़ में प्रधानमंत्री की प्रेरणा से निर्माण हुआ है। प्रधानमंत्री ने अंग्रेजों के दमन का शिकार हुए 1200 जनजाति बंधुओं का स्मारक भी साबरकांठा के पाल-दढवाव में स्थापित कर उन अमर शहीदों का इतिहास लोगों के समक्ष रखा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने ऐसी भव्य विरासत को संजोए बैठे जनजातीय समाज को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए अनेक सफल आयाम पूरे किए हैं। उन्होंने ही उमरगाम से अंबाजी तक के संपूर्ण जनजातीय पट्टे के सर्वग्राही विकास के लिए वनबंधु कल्याण योजना शुरू कराई थी।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि देश में प्रधानमंत्री जनजाति दिवस न्याय महाअभियान-पीएम जनमन के लिए 24 हजार करोड़ रुपए का मिशन शुरू हुआ है। गुजरात ने प्रधानमंत्री की हर योजना के क्रियान्वयन में अग्रसर रहने की प्राप्त की गई उपलब्धियों को इस पीएम जनमन में भी बनाए रखा है। मुख्यमंत्री ने विशेष कमजोर आदिम समूहों को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) अंतर्गत आवास आवंटन में गुजरात द्वारा देश में बेस्ट परफॉर्मर स्टेट का पुरस्कार प्राप्त किए जाने पर गौरव व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान प्रारंभ कराया है। गुजरात में इस अभियान में 21 जिलों में 700 से अधिक सेवा शिविर आयोजित कर 5 लाख से अधिक जनजातीय लोगों को समाविष्ट किया गया है और लगभग 22 विकासोन्मुखी योजनाओं का लाभ 1 लाख से अधिक जनजातीय बंधुओं को दिया है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों में एक समय विज्ञान संकाय के स्कूल नहीं थे, परंतु आज प्रधानमंत्री के दिशादर्शन में जनजातीय क्षेत्रों में 12 साइंस कॉलेज, 2 यूनिवर्सिटी और 11 मेडिकल कॉलेज होने के कारण जनजातीय परिवारों की संतानें डॉक्टर-इंजीनियर बनने लगी हैं। उन्होंने जोड़ा कि जनजातीय समुदायों की स्वास्थ्य सुख-सुविधा को और अधिक सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री की प्रेरणा से गुजरात जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट शुरू करने वाला देश का प्रथम राज्य बना है।

मुख्यमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा तथा जनजातीय समाज के योगदान को लोगों तक पहुंचाने के लिए राज्य में 7 से 13 नवंबर के दौरान जनजातीय गौरव रथयात्रा के आयोजन की सफलता का भी वर्णन किया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिरसा मुंडा के वंशजों श्री सुखराम मुंडा व श्री रवि मुंडा को शॉल ओढ़ाकर तथा पुष्पगुच्छ अर्पित कर सम्मानित किया।

जनजाति कल्याण योजनाओं के लाभार्थियों ने सरकारी योजनागत सहायता से जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन के अनुभवों का प्रधानमंत्री के समक्ष वर्णन किया।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने गुजरात एसटी निगम की भगवान बिरसा मुंडा जनजातीय परिवहन बसों को हरी झंडी दिखाकर प्रस्थान कराया।

प्रधानमंत्री ने मंच पर भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा को पुष्पांजलि अर्पित कर उनकी भाववंदना की। प्रधानमंत्री को जनजाति समुदाय के प्रतीक समान कोटी, कड़ा और गमछा अर्पित कर उनका स्वागत किया गया। सभी उपस्थितों ने जनजाति विकास को प्रस्तुत करने वाली शॉर्ट वीडियो फिल्म देखी।

इस अवसर पर राज्य के आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल, खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियां राज्य मंत्री डॉ. जयरामभाई गामित, प्रदेश संगठन अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, सांसद श्री मनसुखभाई वसावा, विधायक श्रीमती दर्शनाबेन देशमुख, आदिजाति विकास विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती शाहमीना हुसैन, जनजाति विभाग के निदेशक श्री आशिष कुमार, जिला कलेक्टर श्री एस. के. मोदी, जिला पुलिस अधीक्षक सुश्री विशाखा डबराल, पदाधिकारी, जिला प्रशासन के अधिकारी और बड़ी संख्या में जनजातीय नागरिक उपस्थित रहे।

भावनगर रेलवे मंडल के वेरावल स्टेशन के कर्मचारियों द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य

(जीएनएस)। दिनांक 13 नवम्बर 2025 की सुबह गडू (शेरबाग) गाँव के दो बालक दिव्य कल्पेशभाई जेठवा और हर्षिल कल्पेशभाई जेठवा, दोनों आयु 12 वर्ष लगभग प्रातः 8:00 बजे लापता हो गए। प्राप्त सूचना के आधार पर संदेह हुआ कि वे प्रातः 10:05 बजे प्रस्थान करने वाली जबलपुर ट्रेन में सवार हो सकते हैं। परिवारजन तुरंत वेरावल रेलवे स्टेशन पहुँचे, जहाँ उनकी मुलाकात श्री अशोक खंडेलवाल (CTI–वेरावल) और श्री रवि चुडासमा (HTC–वेरावल) से हुई। यद्यपि परिवारजन उन दोनों रेलवे कर्मचारियों के लिए पूर्णतः अपरिचित थे, फिर भी दोनों कर्मकारियों ने इस स्थिति को अत्यंत संवेदनशीलता, मानवीयता और समर्पण के साथ संभाला मानो उनके अपने बच्चे गुम हो गए हों।

दोनों कर्मचारी पूरे समय परिवार के साथ रहे और हर संभव सहायता प्रदान करते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने रात 11 बजे तक अपना भोजन भी नहीं किया।

लगभग 11 बजे अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से सूचना मिली कि दोनों बच्चे सुरक्षित मिल गए हैं। परिवार को पूरी राहत मिलने और सुरक्षित जानकारी उपलब्ध होने के बाद ही दोनों कर्मचारी रात देर से अपने घर लौटे।

उक्त बच्चों के परिवार ने वेरावल रेलवे स्टेशन के संपूर्ण स्टाफ, कैमरा चेकिंग विभाग तथा आरपीएफ पुलिस द्वारा प्रदान किए गए सहयोग और समन्वय के लिए आभार व्यक्त किया है। विशेष रूप से श्री अशोक खंडेलवाल (CTI–वेरावल) और श्री रवि चुडासमा (HTC–वेरावल) द्वारा प्रदर्शित त्वरित कार्यवाही, नेतृत्व, संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा के लिए परिवार ने उनके प्रति विशेष सराहना व्यक्त की है।

उनकी तत्पर प्रतिक्रिया, मानवीय दृष्टिकोण और अथक प्रयासों ने परिवार सहित गाँव-समाज को गहराई से प्रभावित किया है। परिवारजन, विशेषकर बच्चों के अभिभावक, रिश्तेदार और सभी संबंधित व्यक्तियों ने वेरावल रेलवे स्टेशन टीम के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की है। कर्मचारी श्री खंडेलवाल और श्री चुडासमा भारतीय रेल के लिए एक मूल्यवान संपत्ति हैं।

बच्चों के परिजनों ने कहा की भारतीय रेलवे द्वारा प्रदर्शित इस उत्कृष्ट सेवा, मानवीय संवेदना और कर्तव्यनिष्ठा की वे सराहना करते हैं। ऐसे कर्मचारी भारतीय रेल को पूरे देश में विश्वास और सेवा का प्रतीक बनाते हैं।

प्रतापनगर स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के प्रतापनगर स्टेशन को वडोदरा स्टेशन के सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए प्रतापनगर स्टेशन में यार्ड रिमॉडलिंग एवं नॉन इंटरलॉकिंग का कार्य 14 नवंबर, 2025 को पूरा किया गया। इस प्रकार प्रतापनगर स्टेशन से आने वाले दिनों में लम्बी दूरी की मेल एक्सप्रेस ट्रेनों को शुरु किया जा सकेगा, जो ट्रेन परिचालन सहित यात्री सुविधा में अहम होगा।

प्रतापनगर स्टेशन को सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित करने का कार्य वडोदरा मंडल की गति शक्ति यूनिट द्वारा किया गया है। प्रतापनगर स्टेशन विश्वामित्री-दभोई-एकतानगर और दभोई-अलीराजपुर सेक्शन पर स्थित एक एनएसजी-6 स्टेशन है। प्रतापनगर को वडोदरा के एक सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित करने का कार्य वर्ष 2022-23 में कुल 28.93 करोड़ रुपये की लागत से स्वीकृत किया गया था।

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत इस स्टेशन के उन्नयन/आधुनिकीकरण का कार्य जनवरी, 2026 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। जिसमें यात्रियों के लिए निम्न आधुनिक यात्री सुविधाएँ होंगी :

- दो उच्च स्तरीय प्लेटफार्मों वाली दो नई पूर्ण-लंबाई वाली लाइनें
- दूसरे प्रवेश द्वार पर उत्तर दिशा की ओर फसाड (1000 लोगों की क्षमता)
- दो उच्च स्तरीय प्लेटफार्म
- दूसरा प्रवेश द्वार और पार्किंग क्षेत्र
- यात्रियों के लिए दूसरे प्रवेश द्वार पर टिकट बुकिंग काउंटर
- दूसरे प्रवेश द्वार की ओर सर्विस बिल्डिंग
- नया महिला प्रतीक्षालय
- सभी 04 प्लेटफार्म कवर शेड के साथ
- हाई मास्ट लाइट
- नए पानी के नल
- नया पूछताछ कार्यालय
- प्लेटफार्म पर कोच संकेतक

मंडल रेल अस्पताल, भावनगर में महिला कर्मचारियों के लिए सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना

(जीएनएस)। महिला रेल कर्मचारियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भावनगर रेलवे मंडल द्वारा एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। दिनांक 14 नवंबर 2025 (शुक्रवार) को मंडल रेल अस्पताल, भावनगर में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना की गई। यह व्यवस्था महिला कर्मचारियों को कार्यस्थल पर ही सहज, सुरक्षित एवं सम्मानजनक स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की यह वेंडिंग मशीन कर्मचारी हित निधि (SBF) के सौजन्य से स्थापित की गई है। इस अवसर पर सहायक कार्मिक अधिकारी श्री वाई. राधेश्याम जी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री सुबोध कुमार, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारीगण तथा विभिन्न यूनीयन प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना से महिला कर्मचारियों को आकस्मिक परिस्थिति में भी तुरंत एवं स्वच्छता के साथ आवश्यक सुविधाएं प्राप्त होंगी। यह कदम कार्यस्थल पर महिलाओं के स्वास्थ्य सुरक्षा और 'हाइजीनिक वर्क एनवायरमेंट' की दिशा में भावनगर मंडल की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बाल दिवस (14 नवम्बर) के अवसर पर बाल मंदिर एवं किड्स हट के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण एवं खेल सामग्री वितरण

(जीएनएस)। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर दिनांक 14 नवम्बर 2025 (शुक्रवार) को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट के विद्यार्थियों को भावनगर परा स्थित रेल म्यूजियम, शहीद स्थल और बाल उद्यान का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों को विभिन्न ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई।

- शहीद स्थल पर उन्हें इसके निर्माण के उद्देश्य तथा देश के प्रति बलिदान देने वाले वीरों के महत्व से अवगत कराया गया।
- रेल म्यूजियम में मीटर गेज एवं नैरो गेज के समय के विभिन्न उपकरणों, तकनीकों एवं रेल इतिहास की रोचक जानकारियों से बच्चों को परिचित कराया गया।
- इसके साथ ही बाल उद्यान में बच्चों ने मनोरंजक गतिविधियों का आनंद लिया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की महिला कल्याण संगठन द्वारा बालकों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए बाल मंदिर और किड्स हट विद्यालयों को खेलकूद की सामग्रियों का वितरण भी किया गया, जिससे बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु प्रोत्साहन मिल सके। इस अवसर पर महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती शालिनी वर्मा, सेक्रेटरी श्रीमती माया त्रिपाठी, ट्रेज़रर श्रीमती वंदना पाटीदार सहित संगठन की अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में ज्ञान के प्रति उत्साह, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति जागरूकता तथा स्वास्थ्यपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण को प्रोत्साहित करना था।

गुजरात के कच्छ क्षेत्र में बनेगी चार नई रेल लाइन

रु.3375 करोड़ की लागत से बनेगी 194 किमी नई रेल लाइन क्षेत्र का होगा समग्र विकास,दिशा और दशा में आयेगा बदलाव नई इंडस्ट्री और व्यापार का होगा आगमन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गुजरात राज्य के कच्छ जिले में दो महत्वपूर्ण नई रेल लाइन देशलपर–हाजीपीर–लूना (81.771 किमी) एवं वायोर–लखपत (62.686 किमी) नई ब्रॉडगेज रेल लाइन परियोजनाओं को केंद्रीय मंत्री मण्डल ने स्वीकृति प्रदान की है और भुज-नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार एवं नलिया–जखाऊ पोर्ट नई रेल लाइन लगभग 194 किमी रु.3375 करोड़ की लागत से बनाई जाएंगी। सीमावर्ती एवं तटीय क्षेत्रों में रेल संपर्क को सुदृढ़ करने, औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने तथा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अवसंरचना को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होंगी।

गुजरात का कच्छ क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों और औद्योगिक क्षमता के मामले में देश के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में गिना जाता है। भारत में उत्पादित कुल लाइम स्टोन का लगभग 70 प्रतिशत उत्पादन कच्छ में होता है, जिससे यह क्षेत्र देश की सबसे बड़ी लाइम स्टोन बेल्ट के रूप में पहचाना जाता है। यहाँ मिलने वाला लाइम स्टोन गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है। यह मुख्यतः उच्च ग्रेड का होता है, जिसमें की मात्रा 48–50% तथा SiO की मात्रा 4–6% के बीच पाई जाती है, जो उच्च गुणवत्ता के मानकों को दर्शाती है।

कच्छ में उपलब्ध बेंटोनाइट मिट्टी भी विश्वभर में अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी खुदाई मुख्य रूप से अबडासा, मांडवी और लखपत तालुकाओं में की जाती है। यहाँ की बेंटोनाइट अपनी उच्च शुद्धता, बेहतर स्वेलिंग क्षमता और कम नमक सामग्री के लिए जानी जाती है। इन विशेषताओं के कारण इसका उपयोग ड्रिलिंग फ्लूइड, कॉस्मेटिक्स, कृषि, वॉटरप्रूफिंग सहित अनेक उद्योगों में किया जाता है। वर्तमान में कच्छ क्षेत्र में 209 बेंटोनाइट खदानें सक्रिय हैं, जहाँ से लगभग 60 मिलियन टन उत्पादन प्रतिवर्ष प्राप्त होता है, जो इसकी औद्योगिक महत्ता को स्पष्ट करता है।

औद्योगिक उत्पादन के साथ-साथ कच्छ क्षेत्र रेलवे के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पश्चिम रेलवे के अंतर्गत यह क्षेत्र सर्वाधिक माल लदान प्रदान करने वाला क्षेत्र है। अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 के बीच यहाँ से औद्योगिक नमक के 1.727 मिलियन मीट्रिक टन, खाद्य नमक के 1.119 मिलियन मीट्रिक टन, तथा कंटेनरों के 10.586 मिलियन मीट्रिक टन का लदान किया गया, जो कच्छ की औद्योगिक क्षमता और लॉजिस्टिक महत्ता को रेखांकित करता है।

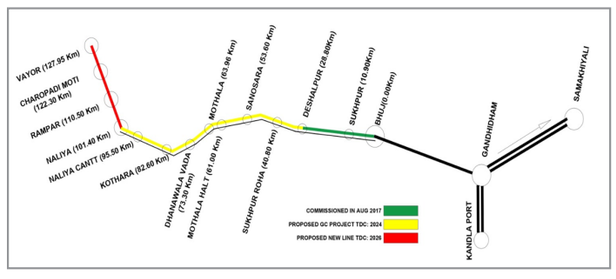

इसके अतिरिक्त, कच्छ का भौगोलिक महत्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय तटीय सीमा के निकट स्थित होने के कारण यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील माना जाता है। यहाँ तेज, सुरक्षित और विश्वसनीय परिवहन तंत्र का विकसित होना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। नई रेल लाइनों के निर्माण और उन्नयन से रक्षा बलों की तैनाती, सैन्य सामग्री के परिवहन तथा आपात स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इससे देश की सामरिक शक्ति और सुरक्षा व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी।

इन परियोजनाओं के माध्यम से न केवल औद्योगिक एवं खनिज संपन्न क्षेत्रों को देश के रेल नेटवर्क से जोड़ा जाएगा, बल्कि स्थानीय जनसुविधा और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों को सशक्त आधार मिलेगा।

भुज–नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार (24.65 किमी)

भुज - नलिया रेल लाइन (101.40 किमी) का मीटर गेज से ब्रॉड गेज में परिवर्तन कार्य पूर्ण हो चुका है। अब नलिया से वायोर तक (24.65 किमी) रेल लाइन का अनुमानित लागत रु. 437.18 करोड़ से विस्तार का किया जा रहा है। यह प्रस्ताव औद्योगिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रमुख उद्योग जैसे सांघी सीमेंट (सांघीपुरम) इस प्रस्तावित परियोजना मार्ग के समीप प्रस्तावित वायोर स्टेशन के निकट स्थित है। वर्तमान में इस उद्योग का उत्पादन ट्रकों द्वारा भुज तक भेजा जाता है और आगे रेल मार्ग से परिवहन किया जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में अभी तक रेल सुविधा उपलब्ध नहीं है।

इसके अतिरिक्त, जेपी सीमेंट द्वारा भी वायोर स्टेशन के निकट एक विशाल सीमेंट उत्पादन इकाई स्थापित की जा रही है, जिसका उत्पादन शीघ्र ही प्रारंभ होने की संभावना है। रेल लाइन के इस विस्तार से इन सभी उद्योगों को सीधी रेल कनेक्टिविटी प्राप्त होगी, जिससे कच्चे माल एवं तैयार उत्पादों का परिवहन अधिक सुगम, तेज़ और किफायती हो जाएगा। इससे सड़क यातायात का दबाव कम होगा, लॉजिस्टिक दक्षता में वृद्धि होगी और क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बल मिलेगा।

भुज–नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक, आर्थिक एवं सामरिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

नलिया–जखाऊ पोर्ट (24.88 किमी) नई ब्रॉडगेज विद्युतीकृत रेल लाइन

नलिया–जखाऊ पोर्ट (24.88 किमी) नई ब्रॉडगेज रेल लाइन, यह रेल लाइन भुज–नलिया खंड के नलिया स्टेशन से प्रारंभ होकर जखाऊ बंदरगाह तक जाएगी। इस परियोजना का उद्देश्य जखाऊ बंदरगाह को रेल नेटवर्क से जोड़ना है, जिससे बंदरगाह की माल ढुलाई क्षमता में वृद्धि होगी तथा मुंद्रा और कांडला जैसे बड़े बंदरगाहों पर बढ़ते दबाव में कमी आएगी। यह बंदरगाह कच्छ जिले के अबडासा तालुका में स्थित है और गुजरात मेरीटाइम बोर्ड द्वारा 2001 में इसका नवीनीकरण किया गया था। जखाऊ बंदरगाह भविष्य में आयात–निर्यात के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित होगा। इस परियोजना की अनुमानित लागत 410.46 करोड़ है। इस क्षेत्र में विशाल भूमि उपलब्ध है, जिससे औद्योगिक इकाइयाँ, गोदाम, सेवा प्रसंस्करण और पैकेजिंग केंद्र स्थापित करने की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी। वर्तमान में यहा से कोयला, नमक, क्लिंकर और सीमेंट का परिवहन सड़क के माध्यम से होता है जो रेल मार्ग से हो सकेगा। जखाऊ बंदरगाह की स्थिति सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बंदरगाह पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय तटीय सीमा के निकट है। जखाऊ बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 67 किलोमीटर दूर है। नलिया भारतीय वायुसेना की पश्चिमी कमान का एक महत्वपूर्ण वायुसेना स्टेशन है। इस रेल लाइन के बनने से रक्षा दृष्टि से भी देश को एक सशक्त संपर्क मार्ग प्राप्त होगा। यह कांडला और मुंद्रा बंदरगाहों पर भीड़ को भी कम करेगा।

सूरत में गूंजा बिहार की जीत का स्वर: पीएम मोदी बोले—'बिहार ने जाति, सांप्रदायिकता और नकारात्मक राजनीति को सिरे से ठुकराया'

(जीएनएस)। गुजरात के औद्योगिक शहर सूरत में उस समय उत्सव जैसा माहौल दिखाई दिया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक विशाल जनसभा को संबोधित करने पहुंचे। मंच पर कदम रखते ही लोगों की आवाज़ों ने माहौल को एक बार फिर चुनावी जोश में बदल दिया। भीड़ में मौजूद सैकड़ों बिहारी प्रवासी, अपने पारंपरिक लाल-सफेद गमछे हवा में लहराते हुए, बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की ऐतिहासिक जीत का जश्न मना रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी ने भी मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर उनका अभिवादन स्वीकार किया, मानो वे केवल प्रधानमंत्री के रूप में नहीं, बल्कि अपने पुराने संबंधों को निभाने वाले एक स्थानीय चेहरे की तरह उनके बीच मौजूद हों।

अपने संबोधन की शुरुआत में मोदी ने सूरत की उस मिट्टी और मेहनतकश संस्कृति को नमन किया जिसने देश की आर्थिक धुरी को मजबूत बनाया है। उन्होंने कहा कि गुजरात का विकास किसी एक राज्य का विकास नहीं, बल्कि 'विकसित भारत' की यात्रा का अहम अध्याय है—और इस अध्याय को सबसे मजबूत हाथ अगर किसी ने दिया है, तो वह है सूरत में रहने वाला बिहार का श्रमिक, कारोबारी और युवा वर्ग। मोदी बोले कि जहां मजदूरों की ईंटें हैं, वहां बिहार की मेहनत गूंथी हुई है, जहां कताई-बुनाई है, वहां बिहारी हाथों का हुनर चमका है और जहां उद्योग खड़े किए गए, वहां बिहारी मन और बुद्धि ने भी ईंट पर ईंट रखी है।

इसके बाद उन्होंने बिहार विधानसभा चुनाव परिणामों का जिक्र किया। पीएम ने कहा कि इस बार बिहार की जनता ने केवल मतदान नहीं किया, बल्कि देश की लोकतांत्रिक चेतना को एक नई दिशा दी है। उन्होंने कहा, "मेरे बिहारी भाई-बहनों ने इस बार जिस परिपक्वता से वोट दिया है, वह बताता है कि बिहार सिर्फ राजनीति पढ़ता नहीं, बल्कि राजनीति समझाता भी है।" उन्होंने कहा कि विपक्ष ने जिस तरह जातिवाद, सांप्रदायिकता और खतरनाक ध्रुवीकरण के बीज बोने की कोशिश की, जनता ने उन्हें पूरी ताकत से उखाड़ फेंका। "बिहार ने विकास को चुना,

स्थिरता को चुना और नकारात्मकता को ठुकरा दिया," मोदी ने आगे कहा।

पीएम ने कहा कि सूरत की यात्रा अधूरी मानी जाती अगर वे वहां बसे बिहारी प्रवासियों से मिले बिना लौट जाते। उन्होंने कहा कि बिहार के लोगों ने न सिर्फ बिहार में एनडीए को मजबूत किया, बल्कि पूरे देश को संदेश दिया कि 21वीं सदी के भारत में जाति की दीवारों पर राजनीति की दुकानें नहीं चल सकतीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने चुनाव में बहाने बनाए, भ्रम फैलाया और सांप्रदायिक जहर परोसने का प्रयास किया, लेकिन जनता ने यह सब खारिज कर दिया।

वक्फ कानून के मुद्दे पर उन्होंने तीखा प्रहार करते हुए कहा कि देश के कई हिस्सों में गैरकानूनी कब्जों को वक्फ प्रॉपर्टी घोषित करने का खेल वर्षों तक चलता रहा। "तमिलनाडु में तो हजारों साल पुराने पूरे गांवों को वक्फ प्रॉपर्टी बनाने की कोशिशें हुईं," मोदी ने कहा। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने संसद में कानून लाकर इस अव्यवस्था को रोकने का काम किया, जिससे अब देशभर में राहत और निष्पक्षता का माहौल बना है।

बिहार की राजनीति पर लौटते हुए पीएम ने कहा कि पिछले दो-तीन वर्षों से राज्य की विधानसभा में कुछ नेताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का अपमान करने का एक 'राजनीतिक फैशन' बना रखा था। लेकिन बिहार की जनता ने वोट के जरिए बता दिया कि सत्ता का असली मालिक जनता होती है, न कि गठबंधन के भीतर बैठे असंतुष्ट नेता। उन्होंने कहा कि विपक्ष को जनता ने सख्त सबक सिखाया है।

कांग्रेस पर हमला करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि लोकसभा चुनाव के बाद जितने भी राज्यों में चुनाव हुए, कांग्रेस की हालत बदतर होती चली गई। उन्होंने कहा कि पांच से छह राज्यों में जितने विधायक कांग्रेस को मिले, उससे ज्यादा विधायक अकेले बिहार में एनडीए को मिल गए। "आज कांग्रेस के पास न दिशा है, न नेतृत्व और न ही जनविश्वास," मोदी ने तीखे लहज़े में कहा।

अपने भाषण के अंतिम हिस्से में पीएम मोदी ने कहा कि हर जीत उनके लिए उत्सव नहीं, बल्कि एक नई जिम्मेदारी लेकर आती है। उन्होंने कहा कि जनता का विश्वास उन्हें और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। "हर विजय हमें याद दिलाती है कि हमारे कंधों पर देश की आशाओं का बोझ है। हमें उसी संकल्प, उसी अनुशासन और उसी निष्ठा के साथ आगे बढ़ना है।"

प्रधानमंत्री के भाषण के दौरान भीड़ बार-बार तालियों और नारों से उनका स्वागत करती रही। मंच से उतरते समय मोदी ने भी गमछे लहराते बिहारी मजदूरों को देखकर हाथ जोड़कर अभिवादन किया। सूरत के इस जनसभा ने केवल एक चुनाव परिणाम का जश्न नहीं मनाया, बल्कि उस विश्वास और ऊर्जा का भी संकेत दिया जिससे देश अपना भविष्य तय करने की ओर अग्रसर है।

देश के हर मेडिकल कॉलेज और जिला अस्पताल में होगी अमृत फार्मेसी: केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा की बड़ी घोषणा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने अमृत फार्मेसी नेटवर्क को बड़े पैमाने पर विस्तार देने की महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य अब देश के हर मेडिकल कॉलेज और हर जिला अस्पताल में अमृत फार्मेसी स्थापित करना है, ताकि आम जनता को किफायती और गुणवत्तापूर्ण दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। भारत मंडपम में अमृत फार्मेसी के 10वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में नड्डा ने बताया कि 2015 में शुरू हुई यह पहल अब तक लगभग 6.85 करोड़ मरीजों को लाभ पहुँचा चुकी है। उन्होंने यह भी कहा कि 50 से 90 प्रतिशत तक की छूट के कारण आम जनता को अब तक लगभग 8,500 करोड़ रुपये की बचत हुई है। फिलहाल देशभर में 255 अमृत आउटलेट संचालित हो रहे हैं। सरकार की योजना है कि इसे जल्द ही 500 तक बढ़ाया जाए। इस अवसर पर नड्डा ने 10 नए आउटलेट्स का उद्घाटन किया और साथ ही अमृत आईटी – इको ग्रीन वर्जन 2.0 डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च किया। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म संचालन और सप्लाई चेन को और अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने में मदद करेगा। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य हर नागरिक तक समान रूप से किफायती और गुणवत्तापूर्ण दवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अमृत फार्मेसी केवल दवा वितरण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य सेवा को आम लोगों तक पहुँचाने में सरकार का प्रमुख अभियान भी है। समारोह के दौरान मोबाइल फार्मेसी वैन, 24×7 नेशनल कॉन्टैक्ट सेंटर, और अमृत की उपलब्धियों पर आधारित कॉफी टेबल बुक भी जारी की गई। इन प्रयासों से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों तक भी दवाओं की आसान उपलब्धता हो। विशेषज्ञों का कहना है कि अमृत फार्मेसी के विस्तार से न केवल दवाओं की कीमतों में कमी आएगी, बल्कि मरीजों की देखभाल में सुधार और स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। इस पहल से देशभर में लाखों लोगों को लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सस्ती और भरोसेमंद दवा उपलब्ध कराने की दिशा में यह एक मील का पत्थर साबित होगी।

नगालैंड में तकनीकी क्रांति की दस्तक: कॉरपोरेट निवेश और एआई कौशल विकास पर सीतारमण का बड़ा संदेश

(जीएनएस)। दीमापुर। उत्तर-पूर्व के पहाड़ी प्रदेशों में तकनीकी और औद्योगिक रूपांतरण की गति किस प्रकार बदल रही है, इसका जीवंत उदाहरण शनिवार को नगालैंड में देखने को मिला, जब केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने तीन दिवसीय दौरे के अंतिम दिन दीमापुर में टूल रूम एंड ट्रेनिंग सेंटर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फ्यूचर स्किल्स उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम सिर्फ एक तकनीकी केंद्र के उदय का संकेत नहीं था, बल्कि यह घोषणा भी थी कि नगालैंड अब भविष्य की तकनीकों को अपनाने और अपने युवाओं को वैश्विक स्तर के कौशल प्रदान करने की दिशा में निर्णायक कदम उठा चुका है।

सीतारमण ने कहा कि नगालैंड कॉरपोरेट निवेश के नए युग में प्रवेश कर चुका है। लंबे समय तक सीमित संसाधनों और भौगोलिक चुनौतियों से जूझते रहे इस राज्य में अब बड़े उद्योग समूहों की दिलचस्पी बढ़ रही है। वित्त मंत्री ने अपने संबोधन में विशेष रूप से दो महत्वपूर्ण पहलों पर रोशनी डाली, जो राज्य के तकनीकी भविष्य को नई परिभाषा देने वाली हैं। पहला, कोहिमा में टाटा समूह के सहयोग से शुरू किया जा रहा सेमीकंडक्टर तकनीक प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो उत्तर-पूर्व के युवाओं को दुनिया की सबसे मांग वाली तकनीक से जोड़ने का अवसर देगा। दूसरा, दीमापुर में साइएंट फाउंडेशन के साथ मिलकर एआई आधारित उन्नत विनिर्माण और 3डी प्रिंटिंग तकनीकों को विकसित करने की महत्त्वाकांक्षी परियोजना, जो नगालैंड को अत्याधुनिक उत्पादन प्रक्रियाओं के वैश्विक नक्शे पर स्थापित कर सकती है।

वित्त मंत्री ने कहा कि ये तकनीकी पहलें न केवल युवाओं के कौशल विकास को बढ़ावा देंगी, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी नई दिशा देंगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि आने वाला समय उन राज्यों का होगा जो नई तकनीकों को अपनाने में अग्रणी होंगे, और नगालैंड ने इस दिशा में उल्लेखनीय शुरुआत कर दी है। उन्होंने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, 3डी प्रिंटिंग और भविष्य के विनिर्माण मॉडल आने वाले वर्षों में रोजगार के सबसे बड़े स्रोत बनेंगे, ऐसे में राज्य के लिए इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण और निवेश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अपने दौरे के दौरान सीतारमण ने आकांक्षी जिलों की प्रगति को भी ध्यान से परखा। उन्होंने कहा कि यह यात्रा सिर्फ उद्घाटन और बैठकों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि सरकार द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रमों का वास्तविक लाभ ज़मीनी स्तर पर लोगों तक पहुँच रहा है या नहीं। उन्होंने ग्रामीण और दूरदराज़ इलाकों में चल रही योजनाओं की समीक्षा की और सुनिश्चित किया कि विकास के लाभों में कोई क्षेत्र पीछे न रह जाए।

शैली इंजीनियरिंग प्लास्टिक्स में बड़े निवेशकों की एंट्री: मॉर्गन स्टेनली–मोतीलाल ओसवाल की भारी खरीद से बाजार में हलचल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के उभरते विनिर्माण क्षेत्रों में तेज़ी से कदम बढ़ा रही शैली इंजीनियरिंग प्लास्टिक्स के शेयरों में शुक्रवार को एक असाधारण हलचल देखी गई, जिसने बाजार विश्लेषकों और निवेशकों दोनों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। कारोबार की शुरुआत के कुछ ही घंटों में बड़ी ब्लॉक डील सामने आई, जिसमें वैश्विक निवेश दिग्गज मॉर्गन स्टेनली ने कंपनी के 40,000 शेयर खरीदकर एक मजबूत संदेश दिया कि भारतीय इंजीनियरिंग उत्पाद उद्योग अभी और ऊँचाइयों को छू सकता है। यह खरीद मॉर्गन स्टेनली की सहयोगी इकाई—मॉर्गन स्टेनली आईएफएससी फंड—के माध्यम से करीब 10.34 करोड़ में की गई। प्रति शेयर कीमत 2,585.10 रही, जो पिछले सत्र के बंद भाव से लगभग 1% कम थी, लेकिन बड़े निवेशकों की रणनीति को देखते हुए यह मूल्य उनके दीर्घकालिक भरोसे को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

इस पूरे सौदे में एक और दिलचस्प पहलू सामने आया, जहां कंपनी के प्रमोटर समूह ने अपनी हिस्सेदारी में आंशिक कटौती की। कंपनी के प्रमुख प्रमोटरों में शामिल अमित महेंद्र सांघवी ने 1 लाख शेयर और लक्ष्मण सांघवी ने 50,000 शेयर बाजार में उतारे। बाज़ार विशेषज्ञ इसे प्रमोटरों द्वारा लाभ बुकिंग के रूप में देख रहे हैं, क्योंकि पिछले एक वर्ष में कंपनी के शेयरों ने लगभग 147% का प्रभावशाली रिटर्न दिया है। शेयरों में यह जबरदस्त उछाल न केवल कंपनी के मजबूत नतीजों को दर्शाता है,

बल्कि उनके विस्तृत उत्पाद पोर्टफोलियो और बढ़ती घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय मांग का संकेत भी देता है।

इसी दौरान भारतीय निवेश जगत का एक और बड़ा नाम—मोतीलाल ओसवाल म्यूचुअल फंड—भी इस मौके से पीछे नहीं रहा। फंड ने लगभग 12.93 करोड़ की लागत के साथ 50,000 शेयर खरीदकर कंपनी में अपना भरोसा जताया। बड़े निवेशकों की इस एंट्री ने बाजार में नए उत्साह और नई संभावनाओं को जन्म दिया है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि ब्लॉक डील्स में प्रसिद्ध निवेश संस्थाओं की भागीदारी अक्सर संकेत देती है कि कंपनी के मूलभूत तत्व मजबूत हैं और उसके उत्पादों या रणनीतियों में दीर्घकालिक वृद्धि की क्षमता मौजूद है।

कंपनी के हालिया तिमाही नतीजों ने भी निवेशकों के इस भरोसे को मजबूत किया है। दूसरी तिमाही में कंपनी का लाभ 134% की वृद्धि के साथ 51 करोड़ पहुंच गया, जबकि आय बढ़कर 259 करोड़ तक जा पहुँची। इन नतीजों ने न केवल निवेशकों के विश्वास को बढ़ाया बल्कि यह भी संकेत दिया कि कंपनी अपनी संचालन क्षमता तथा बाजार विस्तार की योजनाओं को मजबूती के साथ आगे बढ़ा रही है।

अब बाजार की निगाहें सोमवार के सत्र पर टिकी हैं, क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर हुए सौदों का असर आमतौर पर अगले कारोबारी दिन स्पष्ट दिखने लगता है। उम्मीद की जा रही है कि शेयर में तेज़ उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है, खासकर तब जब निवेशक यह समझने की कोशिश करेंगे कि प्रमोटरों की हिस्सेदारी में कटौती, संस्थागत निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी और लगातार बेहतर परिणाम कंपनी के भविष्य को किस दिशा में ले जा सकते हैं। बाज़ार विशेषज्ञ मानते हैं कि अब कंपनी के स्वामित्व ढांचे में हो रहे बदलाव उसकी आगामी रणनीतियों, उत्पादन विस्तार योजनाओं और पूंजीगत निवेश के फैसलों को भी प्रभावित करेंगे।

कुल मिलाकर, शैली इंजीनियरिंग प्लास्टिक्स में हुई यह बड़ी ब्लॉक डील भारतीय बाज़ार में एक नए दौर की ओर संकेत करती है, जहां घरेलू कंपनियाँ विश्वस्तरीय निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनती जा रही हैं। मॉर्गन स्टेनली और मोतीलाल ओसवाल जैसे संस्थागत निवेशकों का बढ़ता भरोसा इस बात की गवाही देता है कि कंपनी आने वाले वर्षों में और तेजी से आगे बढ़ सकती है।

कैश-फॉर-क्वेरी मामला फिर गरमाया: लोकपाल ने CBI को 4 हफ्ते में चार्जशीट दायर करने का आदेश, महुआ मोइत्रा की बढ़ी कानूनी परेशानी

(जीएनएस)। दिल्ली की राजनीतिक फिज़ा एक बार फिर गर्म हो उठी है, क्योंकि बहुचर्चित कैश फॉर क्वेरी मामले में तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा के सामने कानूनी दायरा और कसता हुआ दिखाई दे रहा है। लोकपाल की पूर्ण पीठ ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को चार हफ्तों की तय समयसीमा में संबंधित अदालत में आरोपपत्र दाखिल करने का निर्देश जारी कर दिया है। इस निर्देश के साथ यह मामला एक बार फिर सुर्खियों में लौट आया है, जिससे महुआ मोइत्रा की कानूनी और राजनीतिक दोनों मोर्चों पर मुश्किलें बढ़ना तय माना जा रहा है।

संसद में सवाल पूछने के बदले कथित रूप से 'लाभ' लेने के आरोपों की शुरुआत पिछले वर्ष हुई थी, जब लोकपाल के आदेश पर सीबीआई ने इस मामले की औपचारिक जांच प्रारंभ की थी। जांच एजेंसी को छह महीनों में अपनी विस्तृत रिपोर्ट सौंपनी थी, और उस रिपोर्ट के आधार पर सीबीआई ने लोकपाल से आरोपपत्र दाखिल करने की अनुमति मांगी थी। अब लोकपाल की पूर्ण पीठ ने सीबीआई को इस संबंध में खुली अनुमति दे दी है। आदेश में साफ कहा गया है कि लोकपाल अधिनियम, 2013 की धारा 20(7) और 23(1) के तहत सीबीआई को चार हफ्तों के भीतर चार्जशीट दाखिल करनी होगी, और उसकी एक प्रति लोकपाल कार्यालय में भी सौंपी जाएगी।

दिल्ली के कानूनी गलियारों में इस फैसले को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह वही मामला है जिसमें संसद की आचार समिति ने पिछले वर्ष महुआ मोइत्रा को दोषी ठहराया था और उनकी लोकसभा सदस्यता रद्द कर दी गई थी। दिलचस्प बात यह है कि राजनीतिक विवाद के बीच वे 2024 के लोकसभा चुनाव जीतकर एक बार फिर संसद पहुंच गईं, लेकिन मामला वहीं का वहीं नहीं रुका—जांच लगातार आगे बढ़ती रही।

लोकपाल के ताज़ा निर्देश से यह साफ हो गया है कि अब इस केस की प्रगति तेज़ गति से आगे बढ़ेगी। हालांकि, यह भी स्पष्ट किया गया है कि अदालत में आरोपपत्र दाखिल होते ही आगे की कानूनी प्रक्रिया स्वतः शुरू नहीं होगी। लोकपाल ने लिखा है कि चार्जशीट दाखिल होने के बाद सीबीआई द्वारा दिए गए अन्य आवेदनों पर विचार किया जाएगा। यानी अगला कदम अदालत और लोकपाल दोनों के पटल पर लंबित रहेगा।

इस पूरे विवाद में हाल ही में एक नया मोड़ तब आया जब महुआ मोइत्रा ने आरोप लगाया कि भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने जांच से जुड़े संवेदनशील दस्तावेज मीडिया के सामने रखे। इसी आधार पर उन्होंने लोकपाल की सुनवाई पर रोक लगाने की मांग करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। उच्च न्यायालय की खंडपीठ—न्यायमूर्ति अनिल खेत्रपाल और न्यायमूर्ति हरीश बैद्यनाथ शंकर—ने इस मामले में विस्तृत तर्क सुने, लेकिन अदालत ने साफ कहा कि रिश्वत से जुड़े ऐसे मामलों में इस चरण पर सुनवाई रोकी नहीं जा सकती। अदालत ने महुआ की याचिका खारिज कर दी, जिससे लोकपाल की प्रक्रिया को आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि आरोपपत्र दाखिल होते ही मामला सक्रिय अदालत के दायरे में प्रवेश कर जाएगा और फिर महुआ मोइत्रा को कई चरणों में कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ सकती है। वहीं राजनीतिक विश्लेषक इसे पश्चिम बंगाल की राजनीति और राष्ट्रीय विपक्ष की रणनीति पर भी असर डालने वाला मामला मान रहे हैं।

बिहार चुनाव का परिणाम अविश्वसनीय: कांग्रेस ने उठाए गंभीर सवाल, निर्वाचन प्रक्रिया पर संदेह

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की अभूतपूर्व जीत पर कांग्रेस ने गंभीर सवाल उठाए हैं। पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल ने चुनाव परिणाम को "अविश्वसनीय" करार देते हुए इसकी पारदर्शिता पर ही प्रश्नचिह्न लगाया।

शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में वेणुगोपाल ने कहा कि राजग का इस प्रकार का प्रदर्शन भारतीय चुनावी इतिहास में लगभग अनसुना है। उन्होंने दावा किया कि 90 प्रतिशत से अधिक सीटों पर इतनी बड़ी बढ़त संदिग्ध प्रतीत होती है और कांग्रेस इस पूरे मामले की गहन पड़ताल कर रही है।

उन्होंने बताया कि पार्टी आने वाले एक से दो सप्ताह में अपनी विस्तृत रिपोर्ट और संबंधित आंकड़े सार्वजनिक करेगी। वेणुगोपाल ने निर्वाचन आयोग पर भी आरोप लगाए और कहा कि "पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव" स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस पूरे चुनाव परिणाम का मंथन कर रही है और यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही है कि किसी भी प्रकार की अनियमितता या गड़बड़ी सामने आए तो उसका पूरा खुलासा किया जा सके। कांग्रेस के अनुसार, बिहार में राजग की जीत केवल राजनीतिक परिदृश्य के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह देश में लोकतांत्रिक प्रक्रिया और चुनावी विश्वास के लिए भी गंभीर संकेत देती है। पार्टी ने कहा कि इस संदर्भ में वे परिणामों की समीक्षा के लिए तकनीकी और विधिक दृष्टिकोण से भी विशेषज्ञों की मदद ले रही है। वेणुगोपाल ने कहा कि जनता के विश्वास को बनाए रखना और चुनावों की निष्पक्षता सुनिश्चित करना लोकतंत्र की बुनियादी जिम्मेदारी है। कांग्रेस इस मामले में किसी भी पहलू को नजरअंदाज नहीं करेगी और यदि किसी प्रकार की अनियमितता पाई जाती है, तो वह उसके खिलाफ उचित कार्रवाई करेगी।

विशेषज्ञों का कहना है कि इस बयान से स्पष्ट संकेत मिलता है कि बिहार चुनाव परिणामों को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक चर्चा और विवाद तेज हो सकते हैं। पार्टी की विस्तृत रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट होगा कि यह केवल राजनीतिक बयानबाजी है या इसमें तकनीकी और प्रक्रिया संबंधी गंभीर मुद्दे भी शामिल हैं।

दिल्ली में बच्चों की आंखों को नया सहारा: सफदरजंग अस्पताल ने शुरू किया खास मायोपिया क्लीनिक, बढ़ते स्क्रीन टाइम के दौर में बड़ी पहल

(जीएनएस)। दिल्ली का सफदरजंग अस्पताल सोमवार की सुबह कुछ अलग ही तैयारी में दिखाई दिया। अस्पताल के नेत्र विभाग के गलियारों में डॉक्टरों, मेडिकल स्टाफ और अभिभावकों की हलचल थी। कारण था—बच्चों और युवाओं में तेजी से बढ़ रही एक गंभीर समस्या से निपटने के लिए शुरू किया गया देश की राजधानी का पहला समर्पित मायोपिया क्लीनिक। मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर स्क्रीन की रोशनी से लगातार जूझती इस पीढ़ी के लिए यह क्लीनिक एक बड़ी राहत बनकर उभरा है।

नेशनल मायोपिया वीक के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ अस्पताल की मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. चारु बाम्बा ने किया। उनके साथ नेत्र विभागाध्यक्ष डॉ. अनुज मेहता और मायोपिया क्लिनिक के प्रभारी डॉ. पंकज रंजन भी मौजूद थे। उद्घाटन समारोह भले छोटा था, लेकिन उसके पीछे छिपा उद्देश्य भविष्य में लाखों बच्चों की दृष्टि को सुरक्षित रखने का था। डॉक्टरों के चेहरों पर गंभीरता और आशा दोनों साफ झलक रही थीं।

डॉ. पंकज रंजन ने बताया कि यह क्लीनिक सप्ताह में छह दिन—सोमवार से शनिवार—चलाया जाएगा और आगे से हर शनिवार सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक नियमित रूप से उपलब्ध रहेगा। यहां बच्चे और युवा दोनों मायोपिया की जांच, स्कैनिंग और विशेष उपचार करवा सकेंगे। उन्होंने कहा कि बढ़ते स्क्रीन टाइम, कम होती आउटडोर गतिविधियों और ऑनलाइन पढ़ाई ने पिछले कुछ वर्षों में आंखों की समस्याओं को भयावह तरीके से बढ़ा दिया है। "हम रोज़ ऐसे बच्चों को देखते हैं जिनका चश्मा साल में

दो या तीन बार बदलना पड़ रहा है," उन्होंने बताया। तकनीक के इस नए दौर में डॉक्टरों ने माना कि बच्चों की आंखें पहले की तुलना में बहुत अधिक दबाव झेल रही हैं। एक ही स्क्रीन पर घंटों टिके रहने की आदत ने उनके विजुअल सिस्टम पर अतिरिक्त बोझ डाला है। मोबाइल फोन का चमकदार डिस्प्ले, देर रात तक कार्टून या गेम, स्कूल की ऑनलाइन कक्षाएं और होमवर्क—सब मिलकर बच्चों की आंखों को थका रहे हैं। इसी कारण हाल के वर्षों में मायोपिया की दरें विश्वभर में तेज़ी से बढ़ी हैं और भारत भी इससे अछूता नहीं है। अस्पताल के आंकड़े बताते हैं कि केवल पिछले तीन साल में ही बच्चों में निकट दृष्टि दोष यानी मायोपिया के मामलों में भारी उछाल दर्ज किया गया है। जहां पहले यह समस्या धीरे-धीरे बढ़ती थी, अब कई बच्चे तीन से चार नंबर तक कुछ ही महीनों में पहुंच रहे हैं। यह तेजी न केवल चश्मे का नंबर बढ़ाती है, बल्कि भविष्य में रेटिना संबंधी गंभीर समस्याओं को भी जन्म दे सकती है। रेटिना डिटैचमेंट, ग्लूकोमा और मैक्युलर समस्या जैसी स्थितियां उच्च मायोपिया वाले बच्चों में आम होती जा रही हैं। यही कारण है कि अस्पताल प्रशासन ने एक डेडीकेटेड मायोपिया क्लीनिक की जरूरत महसूस की। इस क्लीनिक में केवल इलाज ही नहीं, बल्कि रोकथाम, जागरूकता और माता-पिता के लिए काउंसलिंग भी दी जाएगी। क्लीनिक में लो-डोज एट्रोपिन आई ड्रॉप्स, मायोपिया कंट्रोल ग्लासेज़, विशेष प्रकार के लेंस, विजुअल हाइजीन गाइडेंस और बच्चों की नियमित मॉनिटरिंग की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

पश्चिम रेलवे द्वारा उधना और ब्रह्मपुर के बीच अमृत भारत एक्सप्रेस की फ्रीक्वेंसी में वृद्धि

(जीएनएस)। अमृतभारत एक्सप्रेस, भारतीय रेल की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य लंबी दूरी के यात्रियों को किफायती किराए पर आधुनिक, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा सुविधाएँ प्रदान करना है। यात्री-केंद्रित उपायों के क्रम में ट्रेन संख्या 19021/19022 उधना-ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस की फ्रीक्वेंसी अब साप्ताहिक से बढ़ाकर त्रि-साप्ताहिक की जा रही है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 19021/19022 उधना–ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस (त्रि-साप्ताहिक):

ट्रेन संख्या 19021 उधना–ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस, जो पहले प्रत्येक रविवार को चलती थी, अब 19 नवंबर, 2025 से रविवार, बुधवार और शुक्रवार को चलेगी। यह ट्रेन उधना से 07:10 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन दोपहर 13:55 बजे ब्रह्मपुर पहुँचेगी। इसी प्रकार,

ट्रेन संख्या 19022 ब्रह्मपुर–उधना अमृत भारत एक्सप्रेस, जो पहले प्रत्येक सोमवार को चलती थी, अब 20 नवंबर, 2025 से सोमवार, गुरुवार और शनिवार को चलेगी। यह ट्रेन ब्रह्मपुर से 23:45 बजे प्रस्थान करेगी और तीसरे दिन 08:45 बजे उधना पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बारडोली, व्यारा, नवापुर, नंदुरबार, दोंडाइचा, सिंदखेड़ा, अमलनेर, धरनगांव, जलगांव, भुसावल, मलकापुर, अकोला, बडनेरा, वर्धा, नागपुर, गोंदिया, दुर्ग, रायपुर, महासमुंद, खरियार रोड, कांटाबांजी, टिटलागढ़, केसिंगा, मुनिगुडा, रायगडा, पार्वतीपुरम, बोब्बिली, विजयनगरम, श्रीकाकुलम रोड और पलासा स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच हैं।

ट्रेन संख्या 19021 के विस्तारित फ्रीक्वेंसी की बुकिंग 16 नवंबर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी।

साबरमती-हरिद्वार द्वि साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार–साबरमती स्पेशल परिवर्तित मार्ग से चलेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती-हरिद्वार द्वि साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर स्टेशन पर रिडवलवमेंट कार्य हेतु मेगा ब्लॉक के चलते ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती परिवर्तित मार्ग से चलेगी। विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09425 साबरमती-हरिद्वार स्पेशल को 29 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल को 30 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल 30 नवंबर 2025 तक निर्धारित मार्ग रेवाड़ी-अलवर-जयपुर-फुलेरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-नारनौल-रींगस-फुलेरा के रास्ते चलेगी। परिवर्तित मार्ग के दौरान यह ट्रेन अटेली, नारनौल, नीम का थाना, रींगस और फुलेरा स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव करेगी।

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

सोनभद्र में योगी का संदेश: 'आदिवासियों का समग्र विकास सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता', बिरसा मुंडा जयंती पर योजनाओं की बड़ी घोषणाएँ

(जीएनएस)। सोनभद्र की सुबह सोमवार को एक विशेष ऊर्जा से भरी हुई थी। जिले के चोपन में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर जुटी हजारों लोगों की भीड़ ने पूरे वातावरण को उत्सव की तरह जीवंत बना दिया। मंच पर जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहुंचे, तो तालियों की गूंज ने इस बात का संकेत दे दिया कि यह कार्यक्रम केवल एक समारोह नहीं, बल्कि जनजातीय समाज के अधिकारों और उनके विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक बनने वाला है। मुख्यमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा को नमन करते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासी समाज की पहचान की लड़ाई में उनका योगदान किसी युगपुरुष से कम नहीं था। उन्होंने याद दिलाया कि केवल 25 वर्ष की अल्प आयु में ही बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के अत्याचारों को चुनौती देकर पूरे जनजातीय समाज को जगाने का कार्य किया और ब्रिटिश शासन को उनके अधिकार मानने पर मजबूर कर दिया।

योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में बताया कि आज जनजातीय समाज तेजी से विकास की मुख्यधारा में जुड़ रहा है और इसका बड़ा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित योजनाओं को जाता है। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में 'जनजातीय गौरव पखवाड़ा' मनाया जा रहा है, जिसमें सांस्कृतिक विरासत, अधिकारों और विकास से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि बलरामपुर में स्थापित जनजातीय संग्रहालय की तर्ज पर अब विंध्याचल मंडल में भी एक भव्य जनजातीय संग्रहालय बनाया जाएगा, जो आदिवासी समाज की परंपराओं, संघर्ष और विरासत को संरक्षित करेगा।

मुख्यमंत्री ने सोनभद्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि सलखन जीवाश्म पार्क और शिवद्वार मंदिर जैसे स्थान जिले की अनोखी पहचान हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर प्रदेश में कुल 15 मान्यता प्राप्त जनजातियाँ हैं, और इनमें से 14 केवल सोनभद्र जिले में निवास करती हैं—यह देश के किसी भी एक जिले में जनजातियों की सबसे अधिक उपस्थिति है। योगी ने कहा कि यह जिला अपनी विविधता, परंपरा और ऐतिहासिक महत्व के कारण राज्य का गौरव है।

योगी आदित्यनाथ ने बताया कि 'पीएम जनमन योजना' के तहत प्रदेश के 517 जनजातीय बहुल गांवों में अभूतपूर्व विकास कार्य किए जा रहे हैं। सड़क, शिक्षा, पेयजल, बिजली, स्वास्थ्य और संचार जैसी बुनियादी सुविधाओं का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वनाधिकार कानून में सुधार के बाद अब तक 23,000 से अधिक भूमि पट्टे आदिवासी परिवारों को प्रदान किए जा चुके हैं, जिससे उन्हें स्थायी आजीविका और सुरक्षा का मार्ग मिल रहा है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने 548 करोड़ रुपये की 432 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इनमें सड़क निर्माण, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, पेयजल योजनाएँ, विद्युत आपूर्ति सुधार और सामाजिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने वाले अनेक कार्य शामिल थे।